मध्यभारत का पर्यटन केन्द्र अमरकटंक : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

1 डॉ. मोहन लाल चढ़ार, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग, इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश

2. डॉ. ज्ञानेन्द्र बहादुर सिंह जौहरी, पर्यटन प्रबन्धन विभाग, इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश

संक्षेपिका

अमरकंटक मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक तथा अध्यात्मिक पर्यटन पुरास्थल है। यहां पर प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक पहुचते है। अमरंकटक में पर्यटन की दृष्टि से अनेक प्राचीन एवं आधुनिक मंदिर एवं मूर्तियां स्थित है। यहां पर कलचुरीकाल से लेकर अठारहवी शती ईस्वी तक के पुरावशेष मिले है। प्राकृतिक दृष्टि से यह स्थल बहुमूल्य सम्पदा का धनी है। भारत की प्रमुख पूज्यनीय नदियों नर्मदा एवं सोनभद्र का उद्गम अमरकटंक स्थित मैकल पर्वत श्रेणी से हुआ है। यहॉ से एक अन्य नदी जोहिला का भी उद्गम हुआ है। भौगोलिक दृष्टिकोण से यह नदियां भारत की प्राचीनतम नदियों में अपना स्थान रखती है। इन नदियो का विस्तार से विवरण स्कन्दपुराण के रेवा खण्ड में मिलता है। यहॉ से शैव सम्प्रदाय, वैष्णव सम्प्रदाय, शाक्त सम्प्रदाय, सौर सम्प्रदाय, गाणपत्य सम्प्रदाय तथा जैन सम्प्रदाय से सम्बधित अनेक कला एवं स्थापत्य के प्रमाण मिले है। अमरकटंक के महत्व का वर्णन हमें रामायण, महाभारत, पुराण, कालीदास का साहित्य इत्यादि में विस्तार से किया गया हैं। अमरकटंक में प्राकृतिक पर्यटन एवं सास्कृतिक पर्यटन के साथ–साथ दर्शन होते है। इसका विस्तार से विवरणात्मक अध्ययन लेख में किया गया है।

परिचय :

अमरकटंक 22^0, 66′,67′′उत्तरी अक्षांश से 81^0, 75′,00′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह मध्यप्रदेश राज्य के अनूपपुर जिले की पुष्पराजगढ़ तहसील में स्थित है। विन्ध्याचल पर्वत श्रृखला की मैकल पर्वत श्रेणी पर स्थित यह मनोरम पर्यटन स्थल पेंन्ड्रा रोड रेल्वे स्टेशन से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर है। यहॉ पहुचने के लिए बस या टैक्सी सेवा उपलब्ध है। अमरकंटक के लिए हवाई यात्रा से जाने के लिए रायपुर या जबलपुर हवाई पत्तन से लगभग 220 किलोमीटर की दूरी तय कर पहुचा जा संकता है। यहॉ से निकलने वाली नर्मदा नदी भारत की एक मात्र बडी नदी है, जो पश्चिम दिशा की ओर बहती है, इस नदी में करोड़ों वर्ष पुराने वनस्पति एवं पशु जीवाश्म भी प्राप्त हुए है। जिससे जीव उत्पत्ति के अनेक रहस्यों को वैज्ञानिक परिदृश्य में सुलझाया जा सका है। नर्मदा नदी में सैकड़ों की संख्या में नर्मदेश्वर शिवलिंग ;बटिकाश्म पत्थरद्ध स्वनिर्मित रुप में प्राप्त होते है। इस नदी के अपवाहतन्त्र की कुल लम्बाई 12200 किलोमीटर है। यह नदी मैकल पर्वत श्रेणी से निकलकर अरब सागर में स्थित खम्भात की खाड़ी में जाकर गिरती है। समुद्र तल से अमरकटंक की ऊचाई 1065 मीटर है। यहां पर विन्ध्यचल एवं सतपुडा श्रृखलाओं का मिलन होता है। इसी भाग को मैकल पर्वत कहा जाता है। इसी पर्वत के नाम पर नर्मदा नदी का एक नाम मैकलसुता भी है। अमरकटंक में कलचुरी कालीन कला के अनेक मंदिर एवं प्रतिमाएं मिली है, उनका विस्तार से वर्णन इस आलेख में किया गया है।

उद्देश्य :

1 अमरकटंक में स्थित पर्यटन स्थलो का धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक विवरण प्रस्तुत करना है जिसके माध्यम से यहॉ पहुचने वाले पर्यटको को प्रमुख पुरास्थलों की जानकारी हो सके एवं पर्यटन की दृष्टि से आस–पास के क्षेत्र का विकास भारत सरकार एवं राज्य सरकार के माध्यम से हो सके।

2 इस लेख का अमरकटंक के पर्यटन को बढावा देना एवं पर्यटन की दृष्टिकोण से प्राचीन कला केन्द्रों की खोज है।

खनिज एवं जीवाश्म : अमरकटंक के आसपास लेटेराइट प्रधानतः बाक्साइट का भण्डार है। जिसमें एल्युमीनियम का 55 प्रतिशत तक है।[1] अमरकटंक के समीप भारतीय उपमहाद्वीप में केवल बरबसपुर एवं देवरीखुर्द में ऐसे वृक्षों के जीवाश्म मिले है, जिनकी जड़ व तने यथावत खड़ी अवस्था में करोडों वर्षो की अश्मीकरण किया के फलस्वरुप पाषाणों में परिवर्तित हो गये है।[2] यह स्थल पर्यटको को देखने के लिए उपयुक्त है। इनको र्प्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा सकता है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

चित्र क्रमांक : 1 अमरकटंक का सामान्य मानचित्र, **साभार : विकीपिडिया**

नामकरण:

अमरकटंक का नाम रामायण, महाभारत, स्कन्दपुराण में **ऋक्षवान** पर्वत के नाम से उल्लेख है।[3] इसी कारण स्कन्दपुराण में नर्मदा को ''ऋक्षपादप्रसूता'' कहा गया है। रामायण काल में ऋक्ष पर्वत पर सम्भवतः ऋक्षराज जामवंत रहते थे। डॉ. सांकलियां के अनुसार यह ऋक्ष प्रजाति के थें।[3] इसी कारण इस पर्वत का नाम ऋक्ष या ऋक्षवान पर्वत पडा होगा। आज भी इस पर्वत पर रीछ (भालू) काफी मात्रा में रहते है। कालीदास कृत रघुवशम्, मेघदूतम में अमरकटंक का नाम **आम्रकूट** मिलता है।[4] मेघदूत में इस क्षेत्र में काफी अधिक आमों के बगीचों का उल्लेख किया गया है, सम्भवतः इस क्षेत्र में आम अधिक होते थे। आज भी इस क्षेत्र में आम के बगीचे इस क्षेत्र में है। इसी कारण इसका नाम गुप्तकाल में आम्रकूट किया गया होगा। इसे **सर्वोदयतीर्थ** भी कहा जाता है। अमरकटंक को साहित्य में **मैकल** भी कहा गया है। महाभारत में अमरकंटक को **वंशगुल्म तीर्थ** कहा गया है।[5] यहॅा वास नामक पौधा अधिक मात्रा में होता था। आज भी यह पौधा बडी मात्रा में इस क्षेत्र में होता है। साहित्य के अनुसार मॉ नर्मदा का उद्‌गम वास के वृक्ष के समीप से हुआ था। सम्भवतः इसी कारण महाभारत काल में अमरकंटक को **वंशगुल्म तीर्थ** कहा जाता था। मार्कण्डेय पुराण में **स्कन्द** नाम मिलता है। मत्स्यपुराण में अमरकटंक के समीपवर्ती क्षेत्र को 'सुरथाद्रिज' कहा गया है। मार्कण्डेय पुराण में इसके लिए अमरकण्ठ, सोमपर्वत, सुरथगिरी इत्यादि शब्दों का उल्लेख है।[6] ब्राम्हाण पुराण में इसे सिद्ध क्षेत्र कहा गया है। पदम पुराण में इस क्षेत्र को चण्डिका तीर्थ कहा गया है।[7]

नर्मदा नदी के नाम एवं उत्पत्ति :

टालमी ने नर्मदा को ''नमडोज'' (Namodos) या 'नर्मदोस' कहा गया है। पेरीप्लस आफ ऐरीथ्रेन्सी में नर्मदा का नाम ''नामोडियस''(Nammodious) मिलता है।[8] भारतीय परम्परा अनुसार सोनभद्र को महानद एवं ब्रम्हा के पुत्र के रुप की जाना जाता है। महाभारत के अनुसार सोन और नर्मदा का उद्‌गम स्थल वंशगुल्म तीर्थ है।[11] नर्मदा के जल स्पर्श करने से वाजिमेध यज्ञ का फल मिलता है।[19] लोक परम्परा में नर्मदा और सोन का साथ साथ विवरण मिलता है। अनुश्रुत्रियों में माना जाता है कि ब्रम्हा की ऑखों से दो बून्द ऑसू पृथ्वी पर गिरे जिससे अमरकटंक श्रेणी के एक ओर नर्मदा और दूसरी ओर सोण की उत्पत्ती हुई।[10]

साहित्य मे नर्मदा नदी के अनेक प्रमुख नाम[11] जैसे रेवा, मेकलसुता ''ऋक्षपादप्रसूता'', शिवसुता, रौद्री, रेवोत्तरस, चचला, सरित प्रवर, कुपा, कृत्रा, बालुवाहिनी, त्रिकूटा, चपला, अजिता, दक्षिण गंगा, सप्तगंगा, शंकरी, साधुप्रिये, विद्याभेदकारिणी, मेकलकन्या, नागकन्या, नारायणी, निराकारा, निरालम्बा, निरंजनी, निरीहा, निर्विकारा, स्वरुपिणी, नित्यरुपा, निर्लोभा, नित्यनन्दिनी, निधेनश्वरी, नेत्रवर्द्धिनी, सिर्जरात्मिका, गणेश्वरी, नखवर्द्धिनी, नरपालिनी, निग्रहेश्वरी, धनवर्द्धिनी, निष्कलेश्वरी, परमेश्वरी, विकवल्लभा, पिकभाषिणी,पशुप्रीता, पंकजेश्वरी, पथिरक्षिणी, परब्रह्मस्वरुपिणी, पद्‌मवल्लभा, बुद्धिवर्धिनी, फलवर्धिनी, वचनप्रिया, वज्रधारिणी, विकटेश्वरी, वरेश्वरी, वक्रकारिणी, ब्रह्मचारिणी, विश्वरुपिणी, भवनाशिनी, भुवनेश्वरी, सनातनी, भिक्षुरक्षिणी, महामोहविनाशिनी, महायोगरता, मखधाणिनी, मन्त्ररुपा, मोक्षकारिणी, महासुरी, मंगला, योगमाया, गतिदायिनी, योगसंरक्षिणी, यक्षभेदनी, यक्षमाता, यन्त्ररुपा, योगरुपा,जीवरक्षिका, रणरक्षिणी, रथकारिणी, लज्जामयी, सत्यधारणी, शोकहन्त्रिणी, सत्यपाली, शत्रुनाशिनी, सुस्थला, शून्यरुपा, सर्प्पहारिणी, सोमकन्यका, सिंहपालिनी, खगगामिनी, सोमकारिणी,

 Copyright © 2020 Authors

छन्दकारिणी, राजेश्वरी, अग्निरुपिणी, कायसुन्दरी, कुम्भकामिनी, गोत्रपालिनी, गोपवल्लभा, गौतमप्रिया, ग्रहेश्वरी, गगनेश्वरी, गिरीकन्यका, गोधनप्रिया, चद्रिका, चन्दनप्रिया, चक्रभेदनी, क्षामसुन्दरी, यज्ञरुपा, कपिला इत्यादि मिलते है।[12]

जलवायुः

अमरकंटक की समशीतोष्ण जलवायु है। यहॉ जून से अक्टूबर तक वर्षा ऋतु होती है। इस समय यहॉ 15^0 से 28^0 तापक्रम रहता है। नवम्बर से फरवरी तक शीतकालीन ऋतु रहती है। इस समय यहॉ 0^0 से 20^0 तापक्रम रहता है। मार्च से मई तक गीष्म ऋतु होती है। इस समय यहॉ 20^0 से 34^0 तापक्रम रहता है। वर्षा ऋतु में यहॉ पहाड़ी पर बादल घिर आते है ये बादल घरों में घुस जाते है, यह मनोरम दृश्य पर्यटकों के मन को आत्म–विभोर कर देता है। अमरकटंक में गीष्म ऋतु में अधिक तापकम होने पर दोपहर बाद बारिश हो जाती है।[13]

वनस्पतिः

अमरकंटक में देवदार वृक्ष, अर्जुन वृक्ष, खादिर वृक्ष, आम्र वृक्ष, जामुन वृक्ष, गरुड फल का वृक्ष, गुलबकावली का पौधा, जंगली हल्दी, पत्थर चटटा, माधवी, ,पीपल, बरगद, सेमल, आवला, हर्र, वहेरा, बेल, कसई, खेर, हल्दू, हेपनी, अशोक, साजा, पाइन, अमरवेल, केला, सीताफल, अमरुद, नीबू, बेर, पपीता, अनानाश, नाश, इमली, अनार, उमर, गूलर, कचनार,महुआ, ब्राम्ही, ब्रम्हा, अश्वगंधा,करौदा,पलास, आडू, अंजीर, लीची, कटहल, शहतूत, कमल, गुलाब, अंजीर, बनमूली, मेहदी, गंधराज, चम्पा, हरसिगार, चंम्पा, गोखरु, जटामासी, एरंड, कचोरा, तुंम्बी, देवदार, नागरमोथा,नागवेल, नागकेसर, चंदन,चमेली, पाइनस, काली हल्दी, शंखपुष्पी, बेला, धतूरा, अकूआ, साल, बहुनियॉ, पीतरंगा, साल, शेफालिका, वन तुलसी, जूही का फूल, कनेर, जलीय वनस्पति, अनेक कद–मूल फल एवं औषिधियॉ प्राप्त होती है। उपर्युक्त वनस्पतियों की इस क्षेत्र में प्राचीन काल से उपस्थिति जीवाश्मों के माध्यम से प्रमाणित होती है। गुलबकावली को आयुर्वेद में बकपुष्प कहा जाता है। यह वनस्पति सिर्फ अमरकटंक में ही होती है। इससे ऑख ठीक करने की दवा बनती है। इसे अग्रेजी में Hedychium, Coronarium कहते है। इस प्रकार अमरकटंक में राज्य वन अनुसंधान संस्थान ने 635 वनस्पतियों की पहचान की है।

प्राकृतिक सौन्दर्यः

अमरकटंक क्षेत्र में सतपुड़ा पर्वत श्रेणी एवं विन्ध्य पर्वत श्रेणियों के प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुपम सौन्दर्य पर्यटकों को देखने को मिलता है। इन दोनो पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित पर्वत श्रृखला को मैकल पर्वत कहा जाता है। मेकल 'मेखला' शब्द का अपभ्रश है।[14] अमरकटंक इसी मैकल पर्वत श्रेणी पर स्थित है। कपिलधारा जलप्रपात के पास दोनो पर्वत श्रेणियों अद्भुत संगम का सौन्दर्य देखने को मिलता है। लोक मान्यतानुसार भगवान शिव ने योगाभ्यास का प्रमुख स्थल कैलास पर्वत के पश्चात दूसरा पर्वत मैकल पर्वत ही बनाया था। [15] अमरकटंक की सम्पूर्ण धरती प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। भारत की नदियों में नर्मदा का विशेष स्थान है। देश की मुख्य सरिताओं में उनकी गिनती की जाती है।

प्रचलित अनुश्रुत्रियां एवं मान्यताएॅ :

प्राचीन भारत में तथा श्याम, जावा, सुमात्रा, बाली आदि देशों में इस राष्ट्र की नदियों की स्तुति करते समय नर्मदा का स्मरण किया जाता है। प्राचीन साहित्य और पुरालेखों में नर्मदा का अनेक बार उल्लेख किया गया है। भारत की सात पवित्र नदियों मे नर्मदा नदी का नाम लिया जाता है। आज भी स्नान करते समय शैव व वैष्णव सम्पद्राय को मानने वाले लोग स्नान करते समय मॉ नर्मदा का नाम लेते है। **गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन संन्निधिं कुरु।।** वेदव्यास जी ने नर्मदा पुराण अलग से लिखकर नर्मदा नदी के सामाजिक, धार्मिक व अध्यात्मिक महत्व को संसार के समक्ष प्रदर्शित किया है। स्कन्दपुराण के अनुसार गंगा में सात बार स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है वही फल मॉ नर्मदा के दर्शन मात्र से मिल जाता है। पुराणों के वर्णन के अनुसार भगवान शिव को उनकी पुत्री नर्मदा अत्याधिक प्रिय है। इसी कारण नर्मदा नदी के प्रत्येक पत्थर में भगवान शिव का वास माना जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित्र मानस में नर्मदा जी के आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्व को इस प्रकार स्पष्ट किया है। **"शिव प्रिये मैकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी।।** इसके अर्थानुसार नर्मदा के तट पर साधना करने वाले साधक को सभी प्रकार की सिद्धियॉ के साथ– साथ सभी प्रकार के भौतिक एवं लौकिक तथा अध्यात्मिक सुख व संम्पति प्राप्त हो जाती है। नर्मदा नदी के तटवर्ती क्षेत्रों में प्राचीन काल से यह नदी लोगो का पालन पोषण करने के साथ– साथ अनेक ऋषि, मुनीयों योगीयों व साधकों की तपोभूमि रही है। बड़े–बड़े ऋषियों को मॉ नर्मदा के तट पर ज्ञान व मोक्ष प्राप्त हुआ है। नर्मदा नदी भारत की एकमात्र नदी है जिसकी परिकमा की जाती है। आज वर्तमान में लोग पैदल एवं वाहन से परिकमा करते है। प्राचीन काल मे सिर्फ पैदल नंगे पैर ही भक्त लोग परिकमा करते थे। पैदल चलकर मॉ नर्मदा की पूर्ण परिकमा लगभग साढ़े तीन वर्ष तेरह दिन में सम्पन्न होती है। अमरकटंक से नर्मदा परिकमा प्रारम्भ होकर खम्भात की खाडी से होकर अमरकटंक में ही समाप्त होती है।

सामाजिक परिदृष्य में नर्मदा पुराण में एक विवरण मिलता है कि नर्मदा जी का विवाह ब्रह्मा के मानस पुत्र सोनभद्र हो रहा था किन्तु जुहिला नाम की एक नाई की लड़की ने सोनभद्र के शिविर में जाकर उसने अपने को नर्मदा बताकर छल कर नर्मदा व सोनभद्र में टकराव हुआ तत्पश्चात नर्मदा जी क्रोधित होकर पश्चिम की ओर नदी के रुप में बहती हुई चली गई जबकि सोनभद्र पूर्व की ओर नद के रुप में बहकर चल दिये। जोहिला अनुपपुर से आगे चलकर सोनभद्र मे मिल गई। यह कथा प्रकृति के मानवीकरण की उत्कृष्टता को प्रकट करती है। नर्मदा जी के नामकरण के सम्बन्ध में अनेक

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

मत मिलते है कुछ विद्वानों के अनुसार नर्मदा का तात्पर्य न–मृता जो कभी न मरे अर्थात जो कभी नश्ट न हो, जो अमर हो, कटंक से तात्पर्य जो आम आदमी की समझ से परे हो, पहुच से कठिन हो। इसी आधार पर नर्मदा के उद्‌गम स्थल को अमरकटंक नाम दिया गया है।

नर्मदा नदी का उद्‌गम् :

नर्मदा के उद्‌गम कुण्ड को रोहणी कुण्ड कहा जाता है। यहां पर स्थित नर्मदा कुण्ड के समीप गौमुख से निकलती हुई मॉ नर्मदा की जल धारा अनुपम दृश्य के दर्शन कराती है। इसे कोटीतीर्थ कहते है।[17] इसके पश्चात एक किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम दिशा में नर्मदा जी का प्रथम आलौकिक बाध प्रशासन द्वारा बनाया गया है। इसे पुष्कर तलाब के नाम से जाना जाता है। यहॉ से लगभग 20 फुट आगे कपिला सरोबर का निर्माण किया गया है। यही पर कपिला नदी नर्मदा नदी में मिलती है। इसके पश्चात प्रशासन द्वारा कबीर सरोबर बनाया गया है। कबीर सरोवर से कुछ दूरी पर अरण्डी नदी का संगम नर्मदा नदी में होता है। इसी स्थान पर प्रशासन द्वारा अरण्डी सरोवर का निमार्ण किया गया है। यहॉ से लगभग 1.5 किलोमीटर की दूरी पर चक्रतीर्थ नाम का दिव्य स्थान स्थित है। पुराणानुसार यहॉ भगवान विष्णु ने तप कर सुदर्शन चक्र प्राप्त किया था। इस कारण इस स्थान का नाम चक्रतीर्थ पड़ा। इस स्थान पर अभी भी सुदर्शन नामक वनस्पति मिलती है। विद्वानों द्वारा ऐसा माना जाता है कि यह वनस्पति सुदर्शन चक्र की भॉति मानव समाज की रक्षा करती है। सम्भवतः इसी वनस्पति के नाम पर इसका नाम चक्रतीर्थ पडा होगा। क्योकि यहॉ रहने वाले तपस्वीयों को प्राचीन समय से इस वनस्पति के बारे में जानकारी थी। इसी स्थल पर मॉ नर्मदा ॐ आकार बनाती हुई प्रवाहित होती है। जो प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से अद्‌भुत है। चक्रतीर्थ से 500 मीटर पर एरण्डी संगम है। लोक मान्यता के अनुसार यहां स्नान करने से सम्पूर्ण पापों का नाश होने के साथ साथ धन, विद्या, सन्तान, मोक्ष इत्यादि की प्राप्ति होती है। यहॉ से 3 किलोमीटर की दूरी पर कपिलधारा नामक जलप्रपात है। यहॉ कपिल ऋषि ने तपस्या की थी।[18] यहा अभी कपिल मुनि का आश्रम बना है। इन्ही ऋषि के नाम पर इस स्थान पर नर्मदा मॉ का नाम कपिला पड़ा। यहॉ पर नर्मदा जी अपना पहला जलप्रपात बनाती है। इस स्थान पर लगभग 108 फिट की ऊँचाई से नर्मदा जी का जल तीव्र वेग से गिरता है। यह नर्मदा का सबसे ऊँचा जलप्रपात है। यहा पर मॉ नर्मदा का प्राकृतिक सौन्दर्य स्वर्गतुल्य अभास देने वाला है। नर्मदा जी यहॉ से लगभग 800 मीटर आगे चलकर दूधधारा नामक जलप्रपात बनाती है।[19] यह मॉ नर्मदा का द्वितीय जलप्रपात है। यहां 11 फुट की ऊँचाई से जल नीचे गिरता है। यहॉ नर्मदा जी का जल दूध की तरह दिखाई देता है। यहां पर दुर्वासा ऋषि ने तपस्या की थी।[19] आज भी उनका आश्रम सिद्व तपोस्थली के रुप में एक विशाल गुफा यहां स्थित है। यहां बैठने पर आज भी अशान्त मन शान्त हो जाता है। कपिल धारा से 4 किलोमीटर की दूरी पर पंचधारा मॉ नर्मदा पाच धराओं में विभजित होती है। इस स्थान को पंचधरा के नाम से जाना जाता है। नर्मदा मंदिर से 3 कलोमीटर की दूरी में म.प्र. प्रशासन ने नर्मदा जी के जो चार बडे बाध बनाये है जिनसे जल संरक्षण के साथ साथ मॉ नर्मदा के विशाल जल के दर्शन होते है। अमरकटंक से उत्तर पश्चिम दिशा में लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर दुर्गाधारा नामक मनोरम जलप्रपात देखने को मिलता है। यह स्थल घने वनों के मध्य स्थित है। यहॉ से पेण्डा रोड जाने वाली सड़क पर डूमरपानी, धरमपानी, तथा मॉ काली गुफा देखने का अवसर मिलता है। यह सभी स्थान प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम छठा विखरते है। वर्षा ऋतु के समय दुर्गाधारा के आसपास ऐसा लगता है। जैसे मेघों नें यहॉ पर अपना अवास वना लिया हो। मॉ दुर्गाधारा जलप्रपात के समीप ही श्री दुर्गाजी का भव्य मंदिर बनाया गया है। मॉ दुर्गाधारा का उद्‌गम स्थल ज्वलेश्वर से पूर्व में लगभग 2 किलोमीटर की दूरी पर है। दुर्गाधारा ग्रीष्म ऋतु में जलप्रपात से 100 मीटर की दूरी तय करके ही भूमि में समाहित हो जाती है। वर्षा ऋतु में मॉ दुर्गाधारा का पानी झरने के रुप में 12 किलोमीटर अमरकटंक के जंगल बहता है।

जोहिला नदी का उद्‌गम :

इस नदी का उद्‌गम् भगवान शिव के मंदिर ज्वालेश्वर धाम के समीप से एक कुण्ड से हुआ है।[20] इस कुण्ड को लोगों ने कुआ के रुप में बना दिया है। जोहिला नदी के उद्‌गम के समीप ही एक बाध बनाया गया है। इसके पश्चात लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर जोहिला नदी पर बड़ा बाघ बनाया गया है। इस बाध के पश्चात यह नदी राजेन्द्रग्राम के पास से बहती हुई लगभग 150 किलोमीटर की दूरी तय करके सोन नदी में मिल जाती है। इस नदी के तट पर अनेक प्रागैतिहासिक पाषाण उपकरण प्राप्त हो चुके है।[21] इससे स्पष्ट होता है कि यह नदी हजारों वर्षो से निरन्तर गतिमान है।

सोन नदी का उद्‌गम्:

भारत की बड़े महानदों में से एक सोनभद्र अर्थात सोन नदी का उद्‌गम अमरकटंक की मैकल पर्वत श्रेणी से हुआ है।[21] मॉ नर्मदा मंदिर से यह स्थान लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में स्थित है। माई की बगिया से इसकी दूरी लगभग 1.2 किलोमीटर है। इसे स्थानीय लोग सोनमुडा के नाम से जानते हैं। सोनभद्र को ब्रम्हाजी का मानस पुत्र माना जाता है। सोनभद्र कुण्ड से 180 मीटर की की दूरी पर मध्यप्रदेश का का सबसे ऊँचाई का जलप्रपात यह जलधारा बनाती है। इसकी ऊँचाई लगभग 111 मीटर है। लोक परम्परा में सोनभद्र जलप्रपात से नीचे गिरने के पश्चात भूमिगत हो जाते है। इसके बाद लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर **सोनबचरवार** नामक स्थान पर सोनभद्र पुनः एक गतिमान जलधरा के रुप में दिखाई देते है। यह स्थान पेण्डा नामक कस्बे से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर वर्तमान छत्तीसगढ राज्य में पडता है। यहा पर एक बाध बना दिया गया है। इसी बाध के समीप से सोनभद्र का उद्‌गम होता है। बाध के नीचे सोनभद्र का कुण्ड बना हुआ है। कुण्ड के समीप भगवान शिव मंदिर, सोन मंदिर, गणेश मंदिर, राम सीता मंदिर, कृष्ण मंदिर, भैरव मंदिर, हनुमान मंदिर बने है। यहॉ से सोन बडी जलधारा के रुप में बहते दिखाई देते है।

 Copyright © 2020 Authors

यह स्थान प्राकृतिक दृष्टिकोण से अनुपम व मनभावन है। उत्तरप्रदेश में इसी नदी के नाम पर एक जिला बनाया गया है। जिसका नाम सोनभद्र है। सोनभद्र विशाल सोन नदी के नाम से मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश में बहते हुए बिहार राज्य में भारत की पवित्र नदी गंगा में मिल जाते है।[22] ब्रम्ह पुराण, रामायण, महाभारत, भगवत गीता में इनका उल्लेख मिलता है। सोनभद्र को पुरुष नद के रुप में माना जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति में नदियों को भी मानवीय स्वरुप प्रदान किया गया है।

अमरकंटक की कला एवं स्थापत्य :

अमरकटंक से प्राप्त प्राचीनतम् मंदिर व मूर्तियॉ कलचुरि शासकों द्वारा निर्मित की गई है। जो उत्तर भारत के प्रतिहार शासकों के बाद में इस भूभाग पर लगभग 1000 ईसवी में शासक हुए थे। यह चंदेल शासकों के समकालीन थे। अमरकंटक पर्वत एवं नर्मदा नदी दोनों का संबंध शिव से होने के कारण अमरकंटक का महत्व प्राचीन काल से भारतीय समाज व संस्कृति में अधिक रहा है। स्कंद पुराण के रेवाखण्ड में नर्मदा की उत्पत्ति की विस्तृत चर्चा है। नर्मदा नदी के धार्मिक महत्व को दृष्टिगत करते हुए इनके तटों पर विभिन्न स्थानों पर समय–समय मंदिरों का निर्माण हुआ जो आज भी पवित्र पुरास्थल के रूप में विद्यमान है। कलचुरि राजवंश के त्रिपुरी शाखा के अधिकांश शासक शैवमतावलम्बी थे, अमरकंटक का शिव से संबंध होने के कारण इन शासकों का यहां से झुकाव स्वाभाविक था। अतः इनके द्वारा अमरकंटक में मंदिरों का निर्माण कराया गया। कलचुरि वंश के पतन के उपरांत इस क्षेत्र पर रीवा क्षेत्र के बघेल एवं 15–16वीं शती ईस्वी में मण्डला क्षेत्र के गौंड शासकों का आधिपत्य रहा। इन शासकों द्वारा अमरकंटक में मंदिरों का निर्माण कराकर शिव एवं नर्मदा को अपनी श्रद्धा अर्पित की गयी। 18वीं–19वीं शती में मराठा शासकों का वर्चस्व बढ़ने पर इनके द्वारा भी अमरकटंक में विभिन्न मंदिरों का निर्माण कराया गया। होल्कर वंश की शासिका देवी अहिल्या परम महेश्वर शिव की आराधक थी। इन्होने भी अमरकंटक में मंदिरों का निर्माण कर यहां की स्थापत्य कला को प्रोत्साहित किया जो अमरकंटक के प्रति श्रद्धा के रूप में आज भी विद्यमान है।[23] ऐसा प्रतीत होता है, कि 8वीं शती के उत्तरार्द्ध में शंकराचार्य द्वारा यहां पर शैव केन्द्र स्थापित करने के उपरान्त कलचुरि शासकों द्वारा यहां निर्मित मंदिरों में मच्छेन्द्रनाथ मंदिर, केशव नारायण मंदिर, पातालेश्वर मंदिर एवं एक अन्य त्रिआयन कर्ण मंदिर उल्लेखनीय है,[24] यह मंदिर पर्यटन की दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। जो इस प्रकार हैः–

कलचुरीकालीन प्राचीन मंदिर परिसर अमरकटंक

मच्छेन्द्रनाथ मंदिरः–

यह मंदिर कलचुरी काल में निर्मित है, इस मंदिर की योजना में आयताकार मण्डप एवं वर्गाकार गर्भगृह है। मंदिर पंचरथ योजना में निर्मित है। इस मंदिर के अनुरथों में लता कर्म से अच्छादित त्रिमुख कीर्तिमुख का शिल्पांकन है। इस मंदिर में सुन्दर लताओं की कलाकृतियों का अंकन किया गया है। शिखर के उत्तरी व दक्षिणी भाग में बाहर की ओर देवकोष्ठ बनाये गये है, जिसमें चन्द्रशिला अलंकरण है। मण्डप की दीवार में प्रयुक्त स्तम्भ अधिष्ठान के ऊपर लताकर्म से अलंकृत है तथा पटिटाएं हीरक एवं लताकर्म अलंकरणों से अलंकृत है। मण्डप का प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है। आयताकार मण्डप के आन्तरिक भाग में चार गोलाकार स्तम्भ है, इन स्तम्भों की लम्बाई 2.10 मीटर है। मण्डप में 1.55 मीटर की ऊंचाई पर कक्षासन निर्मित है। इन आसनों की चौड़ाई 65 से.मी. है तथा इन पर 1.10 मीटर के लघु स्तम्भ है, जो वितान को समर्थन दे रहे है। ये लघु स्तम्भ प्रत्येक दिशा में चार–चार है, इस प्रकार मण्डप में लघु स्तम्भों सहित कुल 12 स्तम्भ है, जिन पर मण्डप की धरणियां आधारित है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार का माप 1.40 X 70 मीटर है। द्वार शाखाएं रेखा कर्म के अलंकरण के अतिरिक्त सादी है। ललाट विम्ब पर नृत्य गणेश का शिल्पांकन है। वर्गाकार गर्भगृह का माप 2.90 मीटर है। गर्भगृह की दीवार में चारों कोनों पर कडश स्तम्भ है, जो गर्भगृह के धरणियों को मजबूती प्रदान करते है। गर्भगृह के मध्य में शिवलिंग प्रतिष्ठित है। यह मंदिर पर्यटको को काफी आकर्षित करता है।[25]

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

मच्छेन्द्रनाथ मंदिर शिव मंदिर अमरकटंक

कर्ण मंदिरः—

त्रिआयतन शैली में यह मंदिर एक ऊंची जगती पर निर्मित है तथा तीनों गर्भगृह एक ही मण्डप में जुड़े हुए है। महामण्डप वर्गाकार है। इसकी प्रत्येक भाग का माप 5.75 मीटर है। मण्डप में पूर्व भाग में मूल मंदिर पश्चिमाभिमुखी है, जबकि उत्तरी व दक्षिणी ओर दो अन्य मंदिर है। प्रत्येक मंदिर में आयताकार अन्तराल एवं वर्गाकार गर्भगृह है। ये तीनों गर्भगृह सप्तरथ योजना में निर्मित है। माना जाता है कि, इस मंदिर का निर्माण कलचुरि शासक लक्ष्मीकर्ण या कर्ण द्वारा करवाया गया था। मूल मंदिर कर्णेस्ता मंदिर समूह में निर्मित यह मंदिर पश्चिमाभिमुखी है। सप्तरथ योजना में निर्मित इस मंदिर के अधिष्ठान में सामान्य बन्धन के ऊपर मुकुद बन्धन तदुपरान्त पुनः एक बन्धन है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार के ललाट विम्ब के ऊपर ऊर्ध्वाकार पटिटका में दो क्षैतिज बन्धन है, जिसके ऊपर पांच देव कोष्ठ निर्मित है। इस पटिटका के ऊपर शुक्रनासिका है। इसकी ऊँचाई अधिष्ठान से तीन मीटर है। आमलाकार के ऊपर चन्द्रिका तदुपरांत आमल सारिका एवं पुनः चन्द्रिका तथा कलश विद्यमान है। मंदिर का विनिर्गम मकराकृति प्रकार की उत्तर दिशा में है, जिससे होकर अर्ध्यजल बाहर निकलता है। मंदिर के प्रवेश द्वार का माप 1.96 X 0.97 मीटर है। इसके दोनो ओर कुडश स्तम्भ है, जो काष्ठकों को समर्थन दे रहे है। पटिटकाएं लताकर्म, मालाकर्म एवं रत्नपुष्प अलंकरण से अलंकृत है। कुडश स्तम्भों में भी लताकर्म अलंकरण है। गर्भगृह का प्रवेश द्वार पंच शाखा प्रकार का है, जिसका निचला भाग सादा है। अंतराल का माप 2.12 X 1.10 मीटर है। यह दक्षिणी गर्भगृह से अपेक्षाकृत बड़ा है एवं दोनों कोनो पर स्तम्भ निर्मित है। इन कुडश स्तम्भों का माप 5.5 मीटर है। मंदिर के आयताकार गर्भगृह का माल 2.75 X 2.65 मीटर हे। इसके प्रत्येक कोनो पर कुडश स्तम्भ है। गर्भगृह में अर्धपटट विद्यमान है तथा निर्गम उत्तर की ओर है। गर्भगृह का वितान नीचे चौकोर तद्परान्त अष्टकोणीय है, जिसके मध्य से विकसित कमल का शिल्पांकन है। इस प्रकार उत्तरी गर्भगृह का प्रवेश द्वार अधिष्ठान और अंतराल सुरक्षित है। कर्ण मंदिर के लगभग 200 फीट उत्तर की ओर स्थित एक मंदिर के भग्नावशेष है।[26]

कर्ण मंदिर अमरकटंक सामान्य दृश्य

केशव नारायण मंदिर :—

यह मंदिर भी मच्छेन्द्र नाथ मंदिर के सपीप ही स्थित है। ऊँची जगती पर निर्मित इस मंदिर में कालान्तर में पश्चिमी ओर एक अन्य देवालय भी निर्मित किए गए। इस प्रकार निर्मित वर्गाकार महामण्डप में दोनों गर्भगृह खुलते है। दोनों देवालयों में वर्गाकार गर्भगृह एवं आयताकार अंतराल है। दोनों ही देवालय पंचरथ योजना में निर्मित है तथा दोनों का प्रवेश द्वारा मण्डप में है। दक्षिणी देवालय उत्ताभिमुखी एवं पश्चिमी देवालय पूर्वाभिमुखी है। इस मंदिर के शिखर का जीर्णोद्धार किया गया है यथापि मूल आमलसार एवं चन्द्रिका सहित शिखर सुरक्षित है। यह मंदिर वास्तु एवं शिल्प संयोजन में मच्छेन्द्र नाथ मंदिर से साम्य रखता है। इस समूह का दूसरा देवालय पूर्वाभिमुखी है, मंदिर का मण्डप वर्गाकार कक्षासनो सहित सुरक्षित है। कक्षासनों पर आधारित स्तम्भ मण्डप के वितान को संभाते हुए है। गर्भगृह एवं मण्डप के प्रवेश द्वार के ललाट विम्ब पर गणेश का शिल्पांकन है। मंदिर के शिखर पर आमलसार, आमलसारिका,

 Copyright © 2020 Authors

 ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 11 June 2020

चन्द्रिका एवं कलश सुरक्षित है। इस मंदिर में लगभग 5 फिट ऊची लाल बलुआ पत्थर से निर्मित विष्णु की प्रतिमा स्थापित है।[27]

केशव नारायण मंदिर अमरकटंक सामान्य दृश्य

पातालेश्वर मंदिर :

यह मंदिर मच्छेन्द्रनाथ मंदिर के समीप ही स्थित है। निर्माण योजना में यह मंदिर मच्छेन्द्रनाथ मंदिर से साम्य रखता है, इसके भू–विन्यास में वर्गाकार गर्भगृह एवं आयताकार मण्डप है, मंदिर का प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर है। शिखर का स्कंध रथों से घिरा हुआ है, जिसके कारण आमलसार का आकार छोटा नजर आता है। इस प्रकार शिखर का बोनापन इन मंदिरों पर उड़ीसा के मंदिरों के कला के शिल्पगत प्रभाव को दर्शाता है। आमलसार के ऊपर चन्द्रिका दृष्टव्य है, परन्तु कलश विद्यमान नहीं है। शिखर के सभी रथ लता कर्म से अलंकृत है, जबकि अन्य रथों का जीर्णोद्वार किया गया है। मण्डप का प्रवेश द्वार पश्चिम की तरफ तथा मच्छेन्द्रनाथ मंदिर के द्वार की तरफ निर्मित है। मंदिर का मण्डप भी मच्छेन्द्रनाथ मंदिर के मण्डप के समान है, समपरन्तु आकार–प्रकार में विस्तृत है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार के समक्ष एक मुख मण्डप बना है जो कालान्तर में निर्मित किया गया होगा। गर्भगृह का प्रवेश द्वार का माप 1.58 x 0.50 मीटर है। गर्भगृह मण्डप के फर्श से 1.40 मीटर नीचा है, जिसके कारण इसके निर्माण शैली पर भूमिज शैली के मंदिर से प्रमाणित होने का अनुमान होता है। वर्गाकार गर्भगृह का माप 2.45 X 2.45 मीटर है। गर्भगृह के कोनों पर कुडश स्तम्भ स्थापित है, जो गर्भगृह के धरणियों को मजबूती प्रदान करते है। गर्भगृह के मध्य में अर्ध्यपटट स्थापित है तथा विनिर्गम उत्तर की ओर है। गर्भगृह का वितान मध्य में पुष्प अलंकरण से अलंकृत है।[28]

पातालेश्वर मंदिर अमरकटंक सामान्य दृश्य

जोहिला मंदिरः–

 Copyright © 2020 Authors

अमरकटंक में कलचुरी मंदिर परिसर में ही एक जोहिला मंदिर बना है। यह उत्तरमुखी है। मंदिर में प्रतिमा नही है। यह मंदिर केशवनरायण व मछेन्द्रनाथ मंदिर के सामने बना हुआ है। निर्माण योजना में यह मंदिर मच्छेन्द्रनाथ मंदिर से साम्य रखता है, इसके भू–विन्यास में वर्गाकार गर्भगृह एवं आयताकार मण्डप है, मंदिर में रत्नपुष्प का अलंकरण है। आमलसार के ऊपर चन्द्रिका दृष्टव्य है, सुन्दर कलश विद्यमान है। शिखर के सभी रथ लता कर्म से वानस्पतिक अलंकृत है।

कलचुरीकालीन जोहिला मंदिर व अन्य मंदिरों का सामान्य दृश्य

नर्मदा मंदिर :

नर्मदा कुण्ड के समीप वर्तमान नर्मदा मंदिर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण कलचुरी राजाओं ने करवाया था। जे. डी. बेगलर के सर्वेक्षण के समय यह मंदिर टूटा हुआ था। इसका जीर्णोद्धार कार्य लगभग 1800 ईस्वी के अन्तिम चरण में हुआ था। इस मंदिर का जीर्णोद्धार रीवा के महाराज ने करवाया था। इस प्रमुख मंदिर के गर्भग्रह में कलचुरीकालीन देवी नर्मदा की प्रतिमा रखी है। इसका काल लगभग 1000 ईस्वी है। चतुर्भुजी नर्मदा पूर्ण विकसित कमल पुष्प पर खडी है। वह अपने ऊपरी दाये हाथ में कमण्डलु तथा निचले बाये हाथ में सनाल पद्म धारण किये है। उनके पैरो के समीप दोनो ओर आसन पर दाढी वाले ऋषि ध्यान मुद्रा में बैठे है। कमल के नीचे एक दाडी वाला योगी दोनों हाथ जोडे हुए पद्मासन मुद्रा में बैठा है। इसके दोनों ओर एक एक चवरधारिणी परिचारिका घुटने टेके बैठे हुए प्रदर्शित है। मॉ नर्मदा जी के सिर के समीप दोनों ओर मालाधारी विद्याधर युगल प्रदर्शित है। यह मंदिर व इसमें स्थापित नर्मदा प्रतिमा नर्मदा पूजा के प्रसार प्रचार का स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। नर्मदा पूजा के व्यापक प्रसार के कारण ही इस क्षेत्र में नर्मदा की मूर्ति का उदभव हुआ। इस मंदिर में सुबह दोपहर व शाम को मॉ नर्मदा जी की आरती व शकराचार्यकृत नर्मदाष्टक का पाठ होता है। नर्मदा मंदिर के समक्ष अमरकंठ बाबा अर्थात भगवान शिव पार्वती का मंदिर स्थित है। इन दोनों मंदिरो के दरवाजे कलात्मक ढंग से रजत धातु के बने है। अमरकटंक के अतिरिक्त जबलपुर त्रिपुरी स्मारक के समीप से 11 वी शती ईस्वी की नर्मदा प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसके अलावा चौसठ योगनी मंदिर में, बरमानघाट जिला नरसिंहपुर, राजराजेश्वरी मंदिर मण्डला व बाबाघाट मण्डला से मॉ नर्मदा की पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रतिमाएँ मिली है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कलचुरी काल के पश्चात भी नर्मदा देवी की स्वतन्त्र अनेक प्रतिमाएँ डाहल मण्डल में गौड राजाओं के शासन काल में भी निर्मित हुई। गौडकाल की नर्मदा प्रतिमाएँ नर्मदा देवी को समर्पित मंदिरों में स्थापित है। कुछ प्रतिमाएँ शिव मंदिरों में मिली है। इन प्रतिमाओं में द्विभुजी या चर्तुभुजी नर्मदा देवी हाथ में कमलपुष्प लिये बनी है। कभी कभी वह हाथ में रुद्राक्षमाला एवं कमण्डलु लिए प्रदर्शित है। नर्मदा को उनके वाहन मगर पर खड़े हुए या बैठे हुए दिखलाया गया है। त्रिपुरी के कलचुरी राजाओं के समय अमरकटंक व डाहल मण्डल में शैव मत, वेष्णव मत के साथ साथ नर्मदा देवी की पूजा प्रचलित थी।[29]

 Copyright © 2020 Authors

गणेश प्रतिमा : गणेश पाँच मुख्य ब्राम्हण सम्प्रदायों में परिगणित गाणपत्य सम्प्रदाय के इष्ट देवता है। वे शिवगणों के अधिपति थे इसलिए उन्हें गणपति कहा गया। गाणपत्य सम्प्रदाय के इष्टदेवता गणपति का उल्लेख सर्वप्रथम अथर्वशिरस उपनिषद में विनायक के नाम से हुआ है। महाभारत, गृह्यसूत्र, स्मृतियों में विघ्नेश्वर तथा विघ्न–विनाशक के रूप में विनायक का उल्लेख मिलात है। गणेश पुराण में गणेश को महाशक्ति कहा गया है। शिव पुरण में उन्हें पार्वतीपुत्र कहा गया हैं वृहत्संहिता, विष्णुधर्मोत्तर, मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण, रूपमण्डन में गणेश प्रतिमा लक्षणों का उल्लेख किया गया है।[30] गणेश प्रतिमाओं की विभिन्न विशेषतायें तथा इनके विभिन्न रूपों का विस्तृत विवरण टी.ए. गोपीनाथ राव ने अपने ग्रन्थ 'एलिमेन्ट्स ऑफ आइकोनोग्राफी' में दिया है।[31] गणपति की स्थानक और आसन प्रतिमाओं का उल्लेख मिलता है। जैन तथा बौद्ध धर्म में भी गणेश पूजा का प्रचलन था। गुप्तकाल में गणपति–शौर्य, आनंद मंगल, प्रखर बुद्धि, ऋषि, पशुधन तथा वाणिज्य व्यवसाय के प्रतिनिधि देवता के रूप में पूजे गये जाते थे। परवर्ती गुप्तकाल में विशेष रूप से मध्यकाल में गाणपत्य प्रतिमाओं की लोकप्रियता बहुत व्यापक थी। नृत्तगणेश मूर्ति का निर्माण पूर्व गुप्तकाल में आरंभ हुआ। गुप्तकाल में उनका प्रचलन बढ़ने लगा और मध्ययुग में बहुत व्यापक हो गया। शास्त्रों के अनुसार नृत्तगणेश की मूर्ति अष्टभुजी होनी चाहिए। सात हाथों में पाश, अंकुश, मोदक, कुठार दन्त, वलय तथा अंगुलीय हो, शेष एक हाथ उन्मुक्त रूप से लटक कर विविध नृत्यमुद्राओं के प्रदर्शन में सहायक होना चाहिए।

गणेश प्रतिमा : अमरकटंक में नर्मदा मंदिर के दरवाजे के समीप एक सुन्दर कला में उत्कीर्ण चतुर्भुजी आसन मै बैठे हुए गणेश की प्रतिमा विद्यमान हैं यह गणेश की मूर्ति में सिदुर लगा होने से इसका काल क्रम ज्ञात करना कठिन है किन्तु यह लगभग 12 वी शती ईस्वी की है। गणेश के दाहिने निचले हाथ में खड्ग है। ऊपरी हाथ गजहस्त है, बॉयीं ओर का निचला हाथ कट्यावलंबित है, तथा दूसरे हाथ में मोदक है। लम्बोदर, सूर्पकर्ण, वक्रतुण्ड गणपति सिर पर मुकुट, हाथों में कंगन और यज्ञोपवीत धारण किए हैं। उन्हें आसन मुद्रा में उत्कीर्ण किया गया है। सूंड़ के पास से बॉयीं ओर का भाग, दोनों पैर व मुकुट का कुछ हिस्सा सपष्ट नही है। नृत्त गणेश का स्थूलकाय शरीर आसन मुद्रा में दर्शनीय है। अमरकटंक में रीवा महाराज के द्वारा बनवाये गये विशाल मंदिर के गर्भगृह के प्रवेश द्वार के सिर दल पर उत्कीर्ण आकृतियों में एक आकृति गणेश की बनी है। सिरदल पर गणेश आकृति उत्कीर्ण होने का आशय यही निकलता है कि गणेश के दर्शन शुभ मानकर सिर दल पर अंकित किया गया। गणेश की आकृति का अंकन अधिक स्पष्टता के साथ हुआ है। एक दो अन्य गणेश प्रतिमाएँ नर्मदा कुण्ड परिसर में रखी है। जो सम्भ्वतः कलचुरी काल की है।

द्विभुजी नृत्त गणेश प्रतिमा :– अमरकटंक में भुगृ कमण्डल से लगभग एक किलोमीटर दूर दक्षिण दिशा में परशु विनायक गणेश की प्रतिमा एक चटटान पर उत्क्रीर्ण है। यह प्रतिमा द्विभुजी नृत्त गणेश की एक मूर्ति परवर्ती कलचुरी काल में निर्मित है। इस मूर्ति के एक हाथ मे परशु लिए है। दूसरे हाथ में मोदक है। मोदक को सूड से खाते हुए दिखाया गया है। लगभग बारहवी सदी ई. में निर्मित यह द्विभुजी नृत्य गणेश की यह पाषाण प्रतिमा सुन्दर कलचुरी कालीन कला में निर्मित है। नृत्यमुद्रा में निर्मित इस प्रतिमा में गणेश का पूर्ण रुप से सुरक्षित है। प्रतिमा में गजमस्तक व गजकर्ण स्पष्ट है। अग्र दक्षिण हाथ में मोदक पात्र था।[32]

सिद्धि विनायक गणेश प्रतिमा : अमरकटंक में भुगृ कमण्डल से लगभग एक किलोमीटर दूर उत्तर दिशा की ओर एक चटटान पर द्विभुजी सिद्धि विनायक को उत्कीर्ण किया गया है। यह प्रतिमा आसन मुद्रा में हैं। आसन मै बैठे हुए गणेश की द्विभुजी प्रतिमा में सिदुर लगा होने से इसका काल क्रम ज्ञात करना कठिन है किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि यह लगभग 12 वी शती ईस्वी की होगी है। ऊपरी हाथ गजहस्त है, बॉयीं ओर का निचला हाथ कट्यावलंबित है, तथा दूसरे हाथ में मोदक है। लम्बोदर, सूर्पकर्ण, ,एक दन्त वक्रतुण्ड गणपति सिर पर मुकुट, हाथों में कंगन और यज्ञोपवीत धारण किए हैं। उन्हें आसन मुद्रा में उत्कीर्ण किया गया है। सूंड़ के पास से बॉयीं ओर का भाग, दोनों पैर व मुकुट का कुछ हिस्सा स्पष्ट नही है। आसन गणेश का स्थूलकाय शरीर आसन मुद्रा में दर्शनीय है। अमरकटंक पर्वत के चारो ओर गणेश प्रतिमाएँ बनी है। स्थानीय लोगो के अनुसार मैकल पर्वत पर वास करने वाले भगवान शिव व पर्वती व नर्मदा मॉ के रक्षक के रुप में पर गणेश प्रतिमाओं का निर्माण किया गया है कि गणेश के दर्शन शुभ मानकर सम्पूर्ण ऋक्ष पर्वत पर गणेश प्रतिमाओं को बनया गया है। गणेश की प्रतिमाओं में का कलाकार ने सुन्दर अंकन अधिक स्पष्टता के साथ किया है।[33] अमरकटंक में परशु विनायक, सिद्धि विनायक, बुद्धी विनायक व दुर्वाधा विनायक की प्रतिमाएँ स्थापित है।

गणेश प्रतिमा : अमरकटंक में नर्मदा मंदिर से लगभग आधा किलोमीटर दक्षिण दिशा में मार्कण्डेय आश्रम में पीपल वृक्ष के नीचे एक चतुर्भुजी सुन्दर सिद्ध गणेश प्रतिमा विराजमान है। गणेश की मूर्ति में सिंदुर लगा होने से इसका काल क्रम ज्ञात करना कठिन है किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह लगभग 12 वी शती ईस्वी की है। गणेश के दाहिने निचले हाथ में खड्ग है। ऊपरी हाथ गजहस्त है, बॉयीं ओर का निचला हाथ कट्यावलंबित है, तथा दूसरे हाथ में मोदक है। मोदक को सूड से खाते हुए दिखाया गया है। लम्बोदर, सूर्पकर्ण, वक्रतुण्ड गणपति सिर पर मुकुट, हाथों में कंगन और यज्ञोपवीत धारण किए हैं। उन्हें आसन मुद्रा में उत्कीर्ण किया गया है। सूंड़ के पास से बॉयीं ओर का भाग, दोनों पैर व मुकुट का कुछ हिस्सा स्पष्ट उत्कीर्ण किया गया है। नृत्त गणेश का स्थूलकाय शरीर आसन मुद्रा में दर्शनीय है।

नर्मदा प्रतिमा : अमरकंटक कुण्ड के प्रमुख मंदिर के गर्भग्रह में कलचुरीकालीन देवी नर्मदा की प्रतिमा रखी है। इसका काल लगभग 1000 ईस्वी की है। चतुर्भुजी नर्मदा पूर्ण विकसित कमल पुष पर खडी है। वह अपने हाथों में से ऊपरी दाये हाथ में कमण्डलु तथा निचले बाये हाथ में सनाल पद्म धारण किये है। उनके पैरो के समीप दोनो ओर आसन पर दाढी वाले ऋषि ध्यान मुद्रा में बैठे है। कमल के नीचे एक दाडी वाला योगी दोनों हाथ जोडे हुए पद्मासन मुद्रा में बैठा

Copyright © 2020 Authors

है। इसके दोनों ओर एक एक चवरधारिणी परिचारिका घुटने टेके बैठे हुए प्रदर्शित है। माँ नर्मदा जी के सिर के समीप दोनों ओर मालाधारी विद्याधर युगल प्रदर्शित है।[13] नर्मदा पूजा के व्यापक प्रसार के कारण ही इस क्षेत्र में नर्मदा की मूर्ति का उदभव हुआ। जबलपुर, मण्डला, त्रिपुरी,व कुकर्रामठ से नर्मदा की कलचुरीकालन व परवर्ती काल की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है। कला में सर्वप्रथम ग्रगा यमुना का अंकन कूर्म व मकर वाहन के साथ गुप्तकाल में किया गया था। पूर्वमध्यकाल में पवित्रता और श्रेष्ठता में नर्मदा को गंगा के समान मुर्तिकला में दिखाया गया। गंगा की भाँति नर्मदा का वाहन भी मकर माना गया है। नदी देवी होने के कारण अपनी दैवी एवं आलौकिक शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए मकर को उनका वाहन बनाया गया था, क्योकि मकर जलजीवों में सर्वाधिक पराक्रमी जीव है। स्वामी वरुण का वाहन भी मकर है। लोक मान्यता के अनुसार देवी नर्मदा का वाहन भी मकर हैं। देवी उसी पर आसीन रहती है। नर्मदा प्रतिमा के निर्माण में देवी गौरी प्रतिमा के प्रतिमा लक्षण काफी कुछ मिलते है। गौरी व नर्मदा की प्रतिमाओं में काफी समानता मिलती है। गौरी व पार्वती शि की पत्नि है। तो नर्मदा जी शिव की पुत्री है। गौरी व नर्मदा की प्रतिमाओं में भी जटा मुकुट मिलता है। गौरी व नर्मदा के दोनों हाथो में कमल रहता है। कुछ प्रतिमाओं में गौरी व नर्मदा प्रतिमाओं में त्रिशूल भी मिलता है। नर्मदा की प्रतिमा में गंगा की भॉति पूर्णघट एवं कमल आयुध बना रहता है। नर्मदा प्रतिमाओं में रुद्राक्षमाला आयुघ के रुप में लिये रहती है। नर्मदा की प्रतिमाएँ आसन व स्थानक दोनो अवस्थाओं में बनाई गई है। मार्कण्डेय ऋषि को देवी नर्मदा अभदान देते हुए निर्मित की गई है।[34]

'kSo izfrek,W%& हड़प्पा संस्कृति के केन्द्रों में लिंगाकार पाषाण उपकरण तथा पत्थर के गोल अथवा आयताकार छल्लों को शिवलिंग और योनि स्वीकार किया गया है। वैदिक काल में शिव का रूद्र रूप अधिक प्रचलित था।[15] सूत्रकाल में औषधि के देवता व विघ्न विनाशक के रूप में शिव प्रतिष्ठित हुए। शिव की प्रतिमा और लिंग की उपासना का सर्वप्रथम विवरण बौधायन गृह्यसूत्र में मिलता है। महाकाव्यों में सर्वोच्च देवता के रूप में शिव पूजित हैं। पुराण काल में अत्याधिक शक्तिशाली देवता के रूप में शिव पूर्णतः स्थापित हो चुके थे। कुषाण काल में प्रतीक और मानव दोनों ही रूपों में शिव की प्रस्तर मूर्तियाँ निर्मित होनें लगीं थीं। गुप्तकाल में निर्मित अनेक शिवलिंग और प्रतिमाएँ अभिलिखित हैं। अमरकटंक की जीवनदायनी नर्मदा नदी के किनारे नर्मदा कुण्ड से लेकर दूधधारा तक अनेक प्राचीन शिवलिंग व नंदी मिलते है। यह शिवलिंग व नंदी काले पत्थर में निर्मित किया गये है। इसकी ऊॅचाई 1.5 मीटर एवं मोटाई 1.2 वर्ग मीटर है। दोनों काले पत्थर पर निर्मित है। उल्लेखनीय है कि अरकटंक में कलचुरी राजा कर्ण ने अनेक शिव मंदिरो का निर्माण करवाया था। तीन कलचुरी कालीन नंदी अमरकटंक कुण्ड के मंदिरो में रखे हैं।

उमा–महेश्वर् प्रतिमा :– यह प्रतिमा नर्मदा मंदिर के बाहर हनुमान प्रतिमा के समीप रखी है। प्रो. आर.के. शर्मा जी ने इसे 12 शती ई. की कलचुरी कालीन प्रतिमा माना है।[35] प्रतिमा में दायी ओर चर्तुभुजी शिव को ललितासन मुद्रा में विराजमान दिखाया गया है। उनके बायी ओर देवी उमा कों बैठे दिखाया गया है। शिव के एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे हाथ में सम्भवतः अक्षमाला रही होगी जो टूट चुकी है। तीसरा हाथ अभयमुद्रा में तथा चौथा हाथ उमा को आलिंगन करते हुए प्रदर्शित है। शिव जटामुकुट, कण्ठहार, पादवलय आदि से अंलकृत है। उमा के एक हाथ को शिव के स्कन्ध पर रखे हुए दूसरे हाथ में कुछ पात्र लिये शिव की जंघा पर बैठ दिखाया गया है। उमा के बाजू में सिंह व्याल का अंकन है। प्रतिमा में देवी उमा एवं शिव के सिर के समीप हाथ में माला लिये दो विधाधरों की आकृति बनाई गयी है। शिव को अपने वाहन नंदी व देवी उमा को उनके वाहन सिंह पर बैठे दिखाया गया है। नंदी को उमा–महेश्वर की ओर देखते हुए शिल्पांकित किया गया है। प्रतिमा में नीचे दो भक्त गणों को हाथ जोडे बनाया गया है। श्रीमद्भागवत में उल्लेख है कि शिव भगवती पार्वती के साथ कैलास पर्वत पर विराजमान रहते है। ऋषीगण एवं सिद्धजन उनकी सेवा किया करतें है। सम्भवतः शिल्पी ने इसी कथानक को प्रतिमा के रुप में शिल्पांकन करने की चेष्टा की है। प्रतिमा की ऍंचाई एवं चौड़ाई लगभग चार फुट है।[36]

उमा–महेश्वर् प्रतिमा : यह प्रतिमा नर्मदा मंदिर के बाहर हनुमान प्रतिमा के समीप रखी है। प्रो. आर.के. शर्मा जी ने इसे 12 शती ई. की कलचुरी कालीन प्रतिमा माना है। प्रतिमा में दायी ओर चर्तुभुजी शिव को ललितासन मुद्रा में विराजमान दिखाया गया है। उनके बायी ओर देवी उमा कों बैठे दिखाया गया है। शिव के एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे हाथ में सम्भवतः शिवलिंग को दिखाया गया है। तीसरा हाथ अभयमुद्रा में तथा चौथा हाथ उमा को आलिंगन करते हुए प्रदर्शित है। शिव जटामुकुट, कण्ठहार, पादवलय आदि से अंलकृत है। उमा के एक हाथ को शिव के स्कन्ध पर रखे हुए दूसरे हाथ में कुछ पात्र लिये शिव की जंघा पर बैठ दिखाया गया है। उमा के बाजू में सिंह व्याल का अंकन अस्पष्ट है। प्रतिमा में देवी उमा एवं शिव के सिर के समीप हाथ में माला लिये दो विधाधरों की आकृति बनाई गयी ह जो अस्पष्ट है। शिव को अपने वाहन नंदी व देवी उमा को उनके वाहन सिंह पर बैठे दिखाया गया है। प्रतिमा का क्षरण हो जाने कारण प्रतिमा में वाहन अस्पष्ट है। नंदी को उमा–महेश्वर की ओर देखते हुए शिल्पांकित किया गया है। प्रतिमा की ऍंचाई एवं चौड़ाई लगभग तीन फुट है।[37]

उमा–महेश्वर् प्रतिमा : यह प्रतिमा नर्मदा मंदिर के बाहर लक्ष्मीनारायण मंदिर के समीप रखी है। प्रो. आर.के. शर्मा जी ने इसे 12 शती ई. की कलचुरी कालीन प्रतिमा माना है।[38] प्रतिमा में दायी ओर चर्तुभुजी शिव को ललितासन मुद्रा में विराजमान दिखाया गया है। उनके बायी ओर देवी उमा कों बैठे दिखाया गया है। शिव के एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे हाथ में सम्भवतः निरियल युक्त कलश को दिखाया गया है। तीसरा हाथ अभयमुद्रा में तथा चौथा हाथ उमा को आलिंगन करते हुए प्रदर्शित है। शिव जटामुकुट, कण्ठहार, पादवलय आदि से अंलकृत है। उमा के एक हाथ को शिव के स्कन्ध पर रखे हुए दूसरे हाथ को ध्यान मुद्रा में लिये शिव की जंघा पर बैठ दिखाया गया है। उमा के बाजू में सिंह व्याल का अंकन अस्पष्ट है। प्रतिमा में देवी उमा एवं शिव के सिर के समीप हाथ में माला लिये दो विधाधरों की आकृति बनाई गयी है। शिव को अपने वाहन नंदी व देवी उमा को उनके वाहन सिंह पर बैठे दिखाया गया है। नंदी को उमा–महेश्वर के

दायी ओर सुन्दर रुप में शिल्पांकित किया गया है। प्रतिमा की ऊँचाई एवं चौड़ाई लगभग 4 फुट है। प्रतिमा में नीचे एक भक्त को हाथ जोडे बैठे दिखया गया है। प्रतिमा मे उपर ब्रह्मा की प्रतिमा को बनाया गया है। शिव के बाजू में एक सेवक खडा हुआ है।[39]

कार्तिकेय प्रतिमा : अमरकटंक मंदिर में नर्मदा मंदिर के बाजू में भगवान शिव व पार्वती के पुत्र कार्तिकेय का मंन्दिर बना हैं। कार्तिकेय को उनके वाहन मयूर के साथ स्थानक अवस्था में बनाया गया है। दाया हाथ वरद मुद्रा में है। वाया हाथ कमर पर रखा हुआ है। रुपमण्डन व अग्निपुराण में कर्तिकेय की प्रतिमा निर्माण की जानकारी मिलती है।

शिवलिंग : भारत में शिवलिंग की पूजा आराधना प्राचीन का से की जाती रही है। नर्मदा के तट पर मिलने वाले अण्डाकार प्रत्येक पत्थर को सिद्ध शिवलिंग माना जाता है। अमरकटंक में सैकडों शिवलिंग देखने को मिलते हैं। नर्मदा मंदिर में प्राचीन लगभग 21 शिवलिंग है। एक मंदिर में ग्यारह शिवलिंग है। चार शिवलिंग अन्य मंदिरों में है। कुछ नर्मदा कुण्ड के आस पास रखे है। महाकाव्यों रामायण व महाभारत में शिवलिंग को सृष्टि की उत्पत्ति का मूल साधन माना है। वाल्मीकी रामायण के उत्तरकाण्ड के रावण नर्मदा अवगाह में वर्णन है कि रावण ने नर्मदा के तट पर शिव के स्वर्णिम, जाम्बुनदमयम लिंग की पूजा अर्चना की थी।[40] महाभारत में लिंगोपसना का विस्तार से वर्णन मिलता है। नर्मदा तटीय शिवलिंगों की महत्ता तो प्रागैतिहासिक है। लेकिन कला की दृष्टि से अमरकटंक क्षेत्र के शिवलिंग पूर्वमध्यकालीन है। रेवा नदी के प्रत्येक कण में शिव के वास होने का कथानक स्कन्दपुराण के रेवाखण्ड में मिलता है। पुराणों में वर्णित शिवलिंगों का उद्भव और उसका महत्व परिलक्षित होता है। शिवलिंग प्राकृतिक शिवलिंग, त्रैराशिक शिवलिंग, मुखलिंग, अष्टोत्तरशिवलिंग, व सहस्त्र शिवलिंग बनाये जाते है।[41] अमरकटंक में प्राकृतिक शिवलिंग व त्रैराशिक शिवलिंग मिलते है। त्रैराशिक शिवलिंग उन्हें कहा जाता है जिनमें एक निश्चित मापदण्ड, 7x8x9 के तहत तीन भाग मे निर्मित होते है। यथा भाग पीठ, वृत्ताकार, भद्रपीठ अष्टकोणीय तथा ब्रह्मपीठ चौकोर बनाया जाता है। भोगपीठ पर ब्रह्मसूत्र रेखाओं का अंकन होता है। अमरकटंक क्षेत्र में अधिकत्तर शिवलिंग पूर्वमध्यकाल के है।[42]

स्वंयभू शिवलिंग : नर्मदा के प्रत्येक कंकण मे शिव के वास की परम्परा प्राकृतिक शिवलिंगों में समाहित है। इसलिए नर्मदा के स्वयं प्रकट शिवलिंगों का रुद्राभिषेक होता है। प्राकृतिक शिवलिंगों की अवधारणा स्कन्दपुराण के रेवाखण्ड में है। इन्हें स्वंयभू शिलिंग भी कहा जाता है।[43] अमरकटंक क्षेत्र में अनेक स्वंयभू शिवलिंग है। जो प्राकृतिक रुप से बने हैं। इनमें सक वंशेश्वर महादेव मन्दिर में स्थापित शिवलिंग स्वंभू है। इनके समीप कलचुरी कालीन नंदी प्रतिमा रखी हुई है। ज्वालेश्वर महादेव शिवलिंग स्वंयभू है। ज्वालेश्वर महादेव के समीप पेण्डा जाने वले मार्ग पर एक स्वयंभू शिवलिंग है। इन्हे लोधेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। एक स्वयं भू शिवलिंग ज्वालेश्वर मंदिर से पश्चिम दिशा में लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अमरकटंक मंदिर परिसर में एक स्वयंभू शिवलिंग वंशेश्वर महादेव है।

ग्यारह टन का शिवलिंग : ज्वालेश्वर के समीप एक 11 टन का शिवलिंग ज्वालेश्वर के समीप स्थित है। यह मंदिर अभी हाल में ही बना है। बारह ज्योर्तिलिंग इस मंदिर में विराजमान है। इस शिवलिंग का निर्माण ऊँकारेश्वर में हुआ था। नर्मदा मंदिर परिसर में ग्यारह शिवलिंग स्थापित है। यह शिवलिंग अमरेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। इसकी स्थापना 6 मई 2009 की गई थी। इसकी चौडाई आठ फिट व लम्बाई 11 फिट है। यह शिवलिंग ग्रेनाइट पत्थर से बना है। यहाँ पर द्वदश ज्योर्तिलिंग यथा श्री रामेश्वरम्, श्री नागेश्वरम्, श्री विश्वनाथम्, श्री भीमाशंकरम्, श्री बौद्यनाथम्, श्री ओमकारेश्वरम्, श्री त्रयमकेश्वरम्, श्री केदरानाथम्, श्री घृष्णेश्वरम्, श्री सोमनाथम्, श्री मल्लिकार्जुनम्, श्री महाकालेश्वरम् स्थापित किये गये है।

नंदी प्रतिमाएँ : अमरकटंक में नर्मदा मंदिर परिसर व कलचुरी मंदिर परिसर में लगभग 11 नदी प्रतिमाएँ रखी है। यह प्रतिमाएँ कलचुरीकालीन कला में निर्मित में निर्मित है। नंदी का विधिवत श्रृगार किया गया है। गले में घण्टी बधी है। नदी के कर्ण व पैरो को जागृत बैठी हुई अवस्था में कलाकार ने निर्मित किया है।[44]

वैष्णव प्रतिमाएँ : उत्तरवैदिक युग में विष्णु की श्रेष्ठता का विवरण सूत्र साहित्य, उपनिषद, और ब्राह्मण साहित्य में उल्लखित है। शतपथ ब्राह्मण तथा मैत्रायिकी उपनिषद में विष्णु के सर्वोच्च देवपद पर स्थापित होने का विवरण मिलता है। इसी कालावधि में अवतारवाद के प्रचलन के साथ विष्णु के महत्व में और अधिक वृद्धि हुई। संपूर्ण वैष्णव धर्म भगवत धर्म के नाम से उद्भूत हुआ है। महाभारत के शांतिपर्व के नारायणीयोपाख्यान में नारायणी धर्म के नाम से भागवत धर्म का वर्णन किया गया है। नारायण, विष्णु का ही एक अन्य नाम है। महाकाव्यकाल तक विष्णु प्रतिष्ठित हो चुके थे। मुद्रासाक्ष्य से भी दूसरी शताब्दी ईसापूर्व में विष्णु पूजा के संकेत मिलते हैं। कुषाणकाल से विष्णु मूर्तियाँ बनने लगीं। यह सभी विद्वान स्वीकार करते हैं। गुप्तकाल में विष्णु के विभिन्न अवतारों की पूजा बहुत लोकप्रिय थी। महाभारत के नारायणीयोपाख्यान में चार अवतारों, वराहा, वामन, नृसिंह तथा मुनष्यों (वासुदेव– कृष्ण) का वर्णन है। मत्स्य पुराण के अनुसार विष्णु की प्रतिमाएँ आसन मुद्रा में, स्थानक मुद्रा में तथा शयन मुद्रा में बनायी जाती है। वृहतसंहिता, विष्णुधर्मोत्तर, देवी भागवत, में विष्णु मूर्ति के निर्माण की विधि का वर्णन हैं। प्राचीन काल मे विष्णु मूर्तियों के अनेक स्वरूपों का विकास देखने को मिलता है। अमरकटंक पुरास्थल से प्राप्त वैष्णव मंदिरो के अवशेषों से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र के समाज में विष्णु के विभिन्न अवतारों की पूजा बहुत लोकप्रिय थी। विष्णु के अवतारवाद की परिकल्पना उत्तर वैदिक साहित्य में मिलती है। जगत कल्याण के उद्देश्य की पूर्ति हेतु पृथ्वी पर मानव अथवा पशु रूप में ईश्वर अवतरित हुए। शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता और श्रीमद्भगवद्गीता में अवतारवाद के स्पष्ट उल्लेख है[45] शतपथ ब्राह्मण और तैत्तिरीय संहिता में प्रजापति के मत्स्य, कूर्म तथा वराह अवतारों की चर्चा है। महाभारत में उल्लेखित है कि अनाचारियों के दमन की लक्ष्य पूर्ति के पश्चात् ईश्वर अपने मूलरूप में परिवर्तित हो जाते हैं। महाभारत के नारायणीयोपाख्यान में चार अवतारों, वराह, वामन, नृसिंह तथा मुनष्यों (वासुदेव–कृष्ण) का वर्णन है। मत्स्य पुराण में जिन दस अवतारों की व्याख्या है, उसमें से तीन

नारायण, नृसिंह तथा वामन दैवीय अवतार हैं। परशुराम को आवेशावतार तथा राम और कृष्ण को पूर्ण अवतार माना जाता है। विष्णु के बाकी अवतारों को अंशावतार माना जाता है। विष्णु की प्रतिमाओं को आसन मुद्रा, स्थानक मुद्रा, तथा शयन मुद्रा में वर्गीकृत किया गया हैं । इन तीनों प्रकार की मुद्राओं वाली प्रतिमाओं को पुनः योग, भोग, वीर तथा अभिचारिक के रूप में वर्गीकृत किया गया है। वृहतसंहिता, विष्णुधर्मोत्तर, देवी भागवत, समरांगतण–सूत्रधार व अग्निपुराण में विष्णु मूर्ति के निर्माण को निर्देशित किया गया हैं। विभिन्न ग्रंथों में अवतारों की संख्या अलग–अलग बतायी गयी है। प्रतिमाशास्त्र में विष्णु के मुख्य 10 अवतारों को ही उल्लेख किया गया है। कला में विष्णु के दस अवतार क्रमशः 1. मत्स्य 2. कूर्म 3.वराह 4.नरसिंह 5.वामन 6. परशुराम 7. राम 8. कृष्ण 9. बुद्ध 10. कल्कि।[46] अमरकटंक क्षेत्र कलचुरी काल में वैष्णव मत के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हो गया था। कलचुरी शासकों के संरक्षण में यहाँ पर विशाल विष्णु मंदिरों व विष्णु प्रतिमाओं का निर्माण किया गया था। यह परम्परा अमरकटंक क्षेत्र में उत्तर मध्यकाल तक चलती रही। अमरकटंक में नर्मदा मंदिर व कलचुरी मंदिर में छः विष्णु प्रतिमाएँ मिली है उनमें से एक गरुडासीन लक्ष्मीनरायण की प्रतिमा है। इन प्रतिमाओं का विस्तार से वर्ण अग्रप्रकार है।

विष्णु प्रतिमा : अमरकटंक में नर्मदा मंदिर से प्राप्त विष्णु प्रतिमा स्थानक अवस्था में है। इस पुरास्थल पर प्राप्त विष्णु प्रतिमा कलचुरीकालीन है। इस प्रतिमा की ऊँचाई 3 फुट 8 इंच है। मूर्ति का मुख आंशिक रूप से खंडित है। इस प्रतिमा में विष्णु को समभंग–मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। उपर के दोनो हाथों में क्रमशः शंख व चक्र है। शेष दो हाथ लगभग खंडित है। प्रतिमा के दाहिनी और गदा बने होने का अवशेष है। निचले हाथों में पकड़े हुए अस्त्र टूट चुके हैं, किन्तु उनके हत्थे अभी भी विद्यमान हैं जिनसे उनके अयुधों की पहचान हो सकी है। एक तरफ गदादेवी बनी हुई है। प्रतिमा की भुजाओं के भुजबंध व हाथों में कड़े दिखलाये गये हैं। विष्णु की इस प्रतिमा की किरीट मुकुट का उत्कृष्ट रूप से अंकन हुआ है। इस पर सिंह मुख बना है। भगवान कण्ठहार धारण किए हुए हैं। पवित्र वैजयंती माला उनके गले में सुशोभित है। कानों में कर्णकुण्डल, अग्रवाम हस्त की कनिष्ठा अंगुली अलंकृत छल्ला (मुद्रिका), अंगद, कंकण, कटिमेखला, धोती और पादवलय से सुशोभित देवता के मस्तक के पीछे विशाल प्रभामण्डल है। कण्ठहार के मध्य में दीर्घ वनमाला और मुकुट का अलंकरण दर्शनीय है। प्रतिमा पर देवत्य के भाव लाये जाते थे। विष्णु, प्रतिमा के नेत्र योगियों की भाँति अर्धोन्मीलित हैं। भगवान विष्णु जो धोती धरण किए हैं, सामने से उसका ग्रथिबंधन (गाँठ) सुस्पष्टता से दिखलायी पड़ता है। पृष्ठभाग में भी धोती चुन्नटें उत्कीर्ण की गईं हैं। पृष्ठभाग में ही ग्रवेयक बंधन को सुन्दर तरीके से बाँधा गया है। पैरा की गाँठों के नीचे एक रेखांकन के माध्यम से धोती का अंकन है। मेखला के नीचे बंधे कटिपट्ट के दोनों छोर बाँयी जंघा की ओर लटकते हुए अंकित है। वैजयंतीमाला धारण किये हुए यह मूर्ति तेज बल व पराक्रम को प्रदर्शित करती है तथा भव्य रूप का दर्शन कराती है यह प्रतिमा एक ही विशाल पाषाण खण्ड को काटकर बनायी गयी हैं। शंख, चक्र, गदा लिए हुए स्थानक मुद्रा में निर्मित किये गये हैं। प्रतिमा की बनावट के आधार पर इसका निर्माणकाल लगभग 1100 ईस्वी के मध्य माना जा सकता है। विष्णुधर्मेत्तर पुराण मे विष्णु प्रतिमा के निर्माण की विधि मिलती है।[47] प्रतिमा के पैरो के नीचे भक्तगण हाथ जोडे हुए उत्कीर्ण किये गये है।

fo".kq izfrek%& अमरकटंक में कलचुरी मंदिरों में से एक केशव नारायण का मंदिर है। इस मंदिर में एक काफी सुन्दर प्रतिमा रखी है। यह अमरकंटंक की दूसरी बडी प्रतिमा स्थानक अवस्था में है। यह विष्णु प्रतिमा कलचुरीकालीन है। प्रतिमा की ऊँचाई लगभग 3 फुट 7 इंच है। मूर्ति का मुख आंशिक रूप से खंडित है। इस प्रतिमा में विष्णु को समभंग–मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। ऊपर के दोनो हाथों में क्रमशः शंख व चक्र है। शेष दो हाथों में से एक में गदा व दूसरा हाथ वरद मुद्रा में है। प्रतिमा के दाहिनी और गदा को सुन्दर आकृति में बनाया गया है। निचले हाथों में पकड़े हुए अस्त्र टूट चुके हैं, किन्तु उनके हत्थे अभी भी विद्यमान हैं जिनसे ही अस्त्रों की पहचान हो सकी है। एक तरफ गदादेवी बनी हुई है। प्रतिमा की भुजाओं के भुजबंध व हाथों में कड़े दिखलाये गये हैं। विष्णु की इस प्रतिमा की किरीट मुकुट का उत्कृष्ट रूप से अंकन हुआ है। इस पर सिंह मुख बना है। भगवान कण्ठहार धारण किए हुए हैं। पवित्र वैजयंती माला उनके गले में सुशोभित है। कानों में कर्णकुण्डल, अग्रवाम हस्त की कनिष्ठा अंगुली अलंकृत छल्ला (मुद्रिका), अंगद, कंकण, कटिमेखला, धोती और पादवलय से सुशोभित देवता के मस्तक के पीछे विशाल प्रभामण्डल है। कण्ठहार के मध्य में दीर्घ वनमाला और मुकुट का अलंकरण दर्शनीय है। विष्णु, प्रतिमा के नेत्र योगियों की भाँति अर्धोन्मीलित हैं। भगवान विष्णु जो धोती धरण किए हैं, सामने से उसका ग्रथिबंधन (गाँठ) सुस्पष्टता से दिखलायी पड़ता है। पृष्ठभाग में भी धोती चुन्नटें उत्कीर्ण की गईं हैं। पैरा की गाँठों के नीचे एक रेखांकन के माध्यम से धोती का अंकन है। मेखला के नीचे बंधे कटिपट्ट के दोनों छोर बाँयी जंघा की ओर लटकते हुए अंकित है। विष्णु को शंख, चक्र, गदा लिए हुए स्थानक मुद्रा में निर्मित किये गये हैं। प्रतिमा की बनावट के आधार पर इसका निर्माणकाल लगभग 1100 ईस्वी के मध्य माना जा सकता है। विष्णु प्रतिमा परिकर में विष्णु के दशावतार क्रमशः 1. मत्स्य 2. कूर्म 3.वराह 4.नरसिंह 5. वामन 6. परशुराम 7. राम 8. कृष्ण 9. बुद्ध 10. कल्कि को शिलाफलक पर बनाया गया है। प्रतिमा के ऊपर मालाधारी विधाधर बने है। प्रतिमा के पैरो के नीचे भक्तगण हाथ जोडे हुए उत्कीर्ण किये गये है।[48]

fo".kq izfrek%& अमरकटंक में नर्मदा कुण्ड के मंदिरों में से एक मंदिर में स्थानक विष्णु की काफी सुन्दर प्रतिमा रखी है। यह अमरकंटंक की तीसरी कलचुरीकालीन विष्णु की बडी प्रतिमा स्थानक अवस्था में बनी है। प्रतिमा की ऊँचाई लगभग 3 फुट 9 इंच है। मूर्ति का मुख आंशिक रूप से खंडित है। इस प्रतिमा में विष्णु को समभंग–मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। उपर के दोनो हाथों में क्रमशः शंख व चक्र है। शंख वाला हाथ खण्डित हो चुका है। शेष दो हाथों में से एक में गदा व दूसरा हाथ वरद मुद्रा में है। प्रतिमा के दाहिनी और गदा को सुन्दर आकृति में बनाया गया है। प्रतिमा की भुजाओं के भुजबंध व हाथों में कड़े व कानो में कुण्डल दिखलाये गये हैं। विष्णु की इस प्रतिमा की किरीट मुकुट का

 Copyright © 2020 Authors

उत्कृष्ट रूप से अंकन हुआ है। भगवान कण्ठहार धारण किए हुए हैं। पवित्र वैजयंती माला उनके गले में सुशोभित है। कानों में कर्णकुण्डल, अग्रवाम हस्त की कनिष्ठा अंगुली अलंकृत छल्ला (मुद्रिका), अंगद, कंकण, कटिमेखला, धोती धारण किये है। कण्ठहार के मध्य में दीर्घ वनमाला और मुकुट का अलंकरण दर्शनीय है। कलचुरीकालीन देवप्रतिमाओं की भावभिव्यंजना पर अधिक ध्यान दिया जाता था। प्रतिमा पर देवत्य के भाव लाये जाते थे। विष्णु, प्रतिमा के नेत्र योगियों की भाँति अर्धोन्मीलित हैं। भगवान विष्णु जो धोती धरण किए हैं, सामने से उसका ग्रथिबंधन (गाँठ) सुस्पष्टता से दिखलायी पड़ता है। मेखला के नीचे बंधे कटिपट्ट के दोनों छोर बाँयी जंघा की ओर लटकते हुए अंकित है। प्रतिमा की बनावट के आधार पर इसका निर्माणकाल लगभग 1200 ईस्वी के मध्य माना जा सकता है।[49] विष्णु प्रतिमा परिकर में विष्णु के दशावतार क्रमशः 1. मत्स्य 2. कूर्म 3.वराह 4.नरसिंह 5.वामन 6. परशुराम 7. राम 8. कृष्ण 9. बुद्ध 10. कल्कि को शिलाफलक पर बनाया गया है। प्रतिमा में ऊपर कुर्म व मत्स्य अवतार तथा नीचे वामन व रामवतार का सुन्दर अंकन किया गया है। प्रतिमा के ऊपर मालाधारी विधाधर बने है। प्रतिमा के पैरो के नीचे भक्तगण हाथ जोडे हुए उत्कीर्ण किये गये है।

fo".kq izfrek%& अमरकटंक में नर्मदा मंदिर परिसर में एक छोटे से मंदिर में तीसरी विष्णु प्रतिमा स्थानक अवस्था में निर्मित रखी है। कला के आधर पर यह विष्णु प्रतिमा परवर्ती कलचुरीकाल की है। प्रतिमा की ऊँचाई 3 फुट 3 इंच है। मूर्ति का मुख आंशिक रूप से खंडित है। इस प्रतिमा में विष्णु को समभंग–मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। विष्णु के चारो हाथों में क्रमशः शंख, पद्म,गदा व चक्र है। प्रतिमा के दाहिनी और गदा व बायी ओर चक्र के बने होने के अवशेष है। प्रतिमा की भुजाओं के भुजबंध व हाथों में कड़े दिखलाये गये हैं। पवित्र वैजयंती माला उनके गले में सुशोभित है। कानों में कर्णकुण्डल, अग्रवाम हस्त की कनिष्ठा अंगुली अलंकृत छल्ला (मुद्रिका), अंगद, कंकण, कटिमेखला, धोती पहने है। कण्ठहार के मध्य में दीर्घ वनमाला और मुकुट का अलंकरण दर्शनीय है। मेखला के नीचे बंधे कटिपट्ट के दोनों छोर बाँयी जंघा की ओर लटकते हुए अंकित है। शंख, चक्र, गदा लिए हुए स्थानक मुद्रा में निर्मित किये गये हैं। प्रतिमा की बनावट के आधार पर इसका निर्माणकाल लगभग 1300 ईस्वी के मध्य माना जा सकता है।[50] प्रतिमा के पैरो के नीचे भक्तगण हाथ जोडे हुए उत्कीर्ण किये गये है। प्रतिमा के परिकर में कुछ मानव आकृतियों का अंकन है, जो अब अस्पष्ट हैं।

विष्णु प्रतिमाः– यह प्रतिमा कलचुरीकालीन मंदिर परिसर में एक नवीन मंदिर बद्रीनाथ मंदिर में रखी है। इस मंदिर में यह स्थानक विष्णु की प्रतिमा लगभग 6 फिट ऊँचाई की है। इस प्रतिमा में पैरो के समीप करबद्ध अवस्था में भक्तगणों को बनाया गया है। सिर के समीप मालाधारी गर्न्धव बने है। प्रतिमा के समीप विष्णु के द्वार रक्षक जय विजय बनाये गये है। डाये हाथ में शख लिये तथा बाये हाथ में चक्र लिये है। नीचे के दाये हाथ में गदा व एक हाथ वरद मुद्रा में बनाया गया है। प्रतिमा में ऊपर परिकर में त्रिदेव बनाये गये है। यह प्रतिमा कला के आधार पर काले पत्थर पर निर्मित कलचुरीकालीन है। इस मंदिर के दरवाजों के स्तम्भों पर गंगा यमुना व त्रिदेवों का अंकन है। कला के आधार पर यह प्रतिमा लगभग 11 वी शती ईस्वी की प्रतीत होती है। हाथों में गदा, चक्र, शंख स्पष्ट रुप से दिखाये गये है। इस मंदिर की स्थानीय लोग बद्रीनाथ भगवान की प्रतिमा मानते है।[51]

गरुणासीन लक्ष्मीनारायण प्रतिमा :–अमरकंटक पुरास्थल से एक गरुणासीन सुन्दर व कलात्मक लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा प्राप्त हुई है। यह प्रतिमा नर्मदा मंदिर परिसर में एक मंदिर में स्थापित है। आकृति में लक्ष्मी को भगवानं विष्णु के बायी ओर बैठे दिखाया गया हैं। विष्णु की चार भुजाएँ हैं। दोनों दाहिने हाथों में क्रमशः चक्र और गदा है। बाँयें हाथों में शंख तथा कमल है। विष्णु के लल्मीनारायण रूप का वर्णन अनेक ग्रंथों में हुआ है। इन रूपों में भुजाओं की ही भिन्नता है। कहीं पर वे दो भुजा वाले, कहीं चार भुजा वाले, तथा कहीं आठ भुजा वाले कहे गऐ हैं। अग्नि पुराण, शिल्परत्न में लक्ष्मीनारायण की चतुर्भुजी प्रतिमा के निर्देश दिये गये हैं। महाभारत, अग्नि पुराण, शिल्परत्न तथा भागवत पुराण में गरुड़ पर आसीन चतुर्भुजी विष्णु को दर्शाने के निर्देश दिये गये हैं।[12] शिल्पसार में गरुड़सीन चतुर्भुजी विष्णु प्रतिमा का उल्लेख किया गया है।[52] एक अन्य चतुर्भुजी लक्ष्मीनारायण की प्रतिमा नर्मदा मंदिर परिसर में मिली है। इसमें भगवान विष्णु को देवी लक्ष्मी के दायी ओर बैठे दिखाया गया है। प्रतिमा में नीचे एक नर नारी करवद्ध अवस्था में बैठे है। हाथों के आयुध खण्डित हो चुके है। यह प्रतिमा कलचुरी काल की है।

सूर्य प्रतिमा :– सूर्योपासना का प्राचीनतम साहित्यिक साक्ष्य ऋग्वेद के रूप में उपलब्ध है। इसमें उन्हें पापनाशक, विष को दूर करने वाला, शारीरिक व्याधियों को हरने वाला बतलाया गया है। वेदों में सूर्य को विश्व की आत्मा बतलाया गया है। ब्रम्हा, विष्णु, इन्द्र तथा अग्नि से सूर्य की एकात्मकता बताते हुए महाभारत में उन्हें देवेश्वर कहा गया हैं इसमें उन्हें, पीतवर्ण, विशालबहू, कवच, कुण्डल तथा आभूषणधारी बतलाया गया है। गुप्तकाल में सूर्य प्रतिमाओं का भारतीयकरण हुआ। गुप्तयुग में निर्मित सूर्य को दण्ड, पिंगल, अरूण तथा सूर्य पत्नियों के साथ निर्मित किया गया था। वृहत्संहिता, मत्स्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर, अग्नि पुराण, श्रीमद्भागवत, भविष्य पुराण, तथा शिल्परत्न में सूर्य प्रतिमा लक्षण बतलायें हैं। अमरकंटक में कलचुरीकाल में निर्मित सूर्य प्रतिमा प्राप्त हुई है।यह प्रतिमा द्विभुजी है। दोनो भुजाएँ खण्डित हैं, तथापि दाहिनी भुजा में धारण किया गया सनाल कमल दृष्टव्य है। सूर्यदेव को स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। इस खण्डित प्रतिमा में सूर्य रथ में जुते चार अश्व ही दृष्टव्य हैं, किन्तु अनुमानित होता है कि रथ में मूलतः सात अश्व जुते हुए थे। सूर्य प्रतिमा का मुखमण्डल भग्नावस्था में है, तथापि किरीट मुकुट और कर्णकुण्डल स्पष्ट रूप से दर्शित होता हैं वनमाला और कटिमेखलाधारी देवता के दाँये पार्श्व में खड़ी एक नारी आकृति और ऊपर मालाधारी गंधर्व है। सूर्यदेव की इस प्रतिमा के दाँयें पार्श्व की आकृति खण्डित हो चुकी है। इस सूर्य प्रतिमा के निर्माण में मूर्ति निर्माण के निर्देशों का

 Copyright © 2020 Authors

पालन किया गया है। तथा शिल्प परम्परा का निर्वाह किया गया है। भगवान सूर्य को जूते पहने दिखाया गया है। पैरों के समीप सारथी अरुण खडा है। प्राचीन काल में मान्यता थी कि सूर्य चलते है इसलिए उन्हे जूते पहने बनाया जाता है।[53]

सिंह आकृतिः—भारतीय कला में सिंह का अंकन अशोक के स्तंभ शीर्ष में देखने में आता है। अमरकंटक में कलचुरी मंदिरो पर सिहों का अंकन हुआ है। सिंह को दुर्गा के वाहन के रूप स्वीकार किया गया है। सिंह का अंकन शुभ माना जाता है। कलचुरी मंदिर के शिखर पर भी सिंह आकृति उत्कीर्ण है। सिंह को कलचुरी नरेश अपना राजचिह्न मानते थे। अमरकटंक कलचुरी मंदिर परिसर में मंदिरों के ऊपर सिंह आकृति को बनाया गया है। इस आकृति में सिंह को गज की सूड पकडे गज के ऊपर बैठे दिखया गया है। इससे ज्ञात होता है कि कलचुरियों ने गज सेना से युक्त दक्षिण कोशल के राजा को पराजित किया था। बहगढ नाला के स्तंभों के निम्न भाग की ऊपरी पट्टी में पीठ से पीठ सटाए सिंहों की आकृतियाँ सुन्दर व कलात्मक रुप में बनी है।

अमरकटंक क्षेत्र के स्थापत्य में गजांकन :— मंदिर स्थापत्य में हाथी का अंकन लोकप्रिय रहा। बहगढ नाला कलचुरीकालीन मंदिर की द्वारशाखा के नीचे दोनें छोरों पर पद्मवन में विचरते हुए हाथी का मनोहारी अंकन है। हाथी के समीप एक वृषभ का अंकन है। इसी मंदिर के एक शिलाखण्ड में पर उत्कीर्ण इन्द्राणी की आकृति के साथ में स्थानक गज का अंकन हैं। धनपुर की कला में अनेक जगह गज का अंकन मिलता है। अमरकटंक कलचुरी मंदिर परिसर में एक स्तम्भ पर हाथी का अंकन है। नर्मदा मंदिर में एक शिलाफलक पर गज का अंकन है।

गजारोही व अश्वारोही :— अमरकंटक नर्मदा मंदिर परिसर में एक गजारोही की कलचुरीकालीन सुन्दर प्रतिमा है। गज पर सवार सैनिक का सिर टूट गया है। इसके नीचे से लोग निकलते है। यह गज नर्मदा मंदिर में आस्था केन्द्र है। लोग इसमें से निकल कर अपने को सुखी महसूस करते है।[54] नर्मदा मंदिर परिसर में एक अश्वारोही की कलचुरीकालीन सुन्दर प्रतिमा है। यह प्रतिमा गजारोही के समीप स्थित है। अश्व पर सवार सैनिक का सिर टूट गया है। यह लाल बलुआ पत्थर पर निर्मित है। इसकी लम्बाई लगभग 4 फिट है। ऊँचाई लगभग 3 फिट है।[55]

योगी प्रतिमाएॅः—अमरकंटक मंदिर में कलचुरीकालीन कला में निर्मित दो युगल योगी प्रतिमाएॅ प्राप्त हुई है। दो पृथक देवी व योगी प्रतिमा भी यहॉ पर रखी है। यह प्रतिमाएॅ लगभग एक फिट छः इंच की ऊँचाई की बनी है। युगल प्रतिमाओं में एक नारी साधक एक पुरुष सााधक बने है। एक प्रतिमा में पुरुष साधक की प्रतिमा बडी बनी है। स्त्री साधको की प्रतिमा छोटी बनी है। दूसरी प्रतिमा में नारी साधक की प्रतिमा बडी बनी है। पुरुष साधक की प्रतिमा छोटी बनी है। ये दोनो पति पत्नि रहे होगे। यह दोनो ने योग साधना करके सिद्धि प्राप्त की होगी। एक प्रतिमा में पत्नि पति का अनुकरण करती दिखाई देती है। यह दोनों बडे तपस्वी रहें होगें। सम्भवतः इनका आश्रम अमरकटंक में ही होगा। दोनों प्रतिमाओं में सिद्ध महार्षि व महिषी दिखाई देते है क्योकि इन प्रतिमाओं में मालाधारी विधाधर प्रतिमा के ऊपर बने है। नारी प्रतिमा में उनकी सेविकाएॅ हाथ जोडे खडी है। अमरकटंक नर्मदा मंदिर में एक देवी कलचुरी कालीन प्रतिमा हाथ जोडे बनाई गई है। देवी के सिर के समीप विधाधर माला लिए हुए दिखाए गये हैं। बाजू में एक सेविका खडी है। एक अन्य मंदिर में एक देवी व देवता की कलचुरी कालीन प्रतिमा रखी है। इनको स्थानीय लोग अन्नपूर्णा देवी के रुप में पूजते है। इस प्रतिमा की कला के आधार पर यह कलचुरी काल की प्रतीत होती है। इस प्रतिमा के अतिरिक्त नर्मदा मंदिर परिसर में देवी पार्वती, उमा, लक्ष्मी की प्रतिमाएॅ रखी हुए है।

नाग प्रतिमाएँ :— मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा से प्राप्त मुद्राओं पर भी नागों को अंकन प्राप्त हुआ है। नाग का भारतीय धर्म और कला से घनिष्ट संबंध रहा है। अथर्ववेद में यक्षों, गंधर्व—अप्सराओं के साथ नागों का उल्लेख मिलता है, इन्हें देवजन कहा गया है। यजुर्वेद में नागपूजा का प्रसंग है। भगवदगीता, महाभारत तथा पुराणों में नागों का उल्लेख हुआ है। बुद्ध तथा जैन तीर्थंकरों के साथ नागों का घनिष्ट संपर्क साहित्यिक तथा पुरातात्विक साक्ष्यों द्वारा प्रमाणित है। शुंगकाल में मानव रूप में नाग प्रतिमाएँ निर्मित कीं जाने लंगी। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार नागों को मानवी रूप में अंकन करते समय इनकी प्रतिमा देवों के समान निर्मित की जानी चाहिए। सिर पर फण शोभित रहता है। साथ ही साथ मानव शरीर पर अलंकरण भी शोभित रहते हैं। ब्राह्मण साहित्य में देव ओर दलित रूपों में नागों का उल्लेख किया गया है। नाग प्रतिमाएॅ अमरकटंक में तो मिली ही है। सम्पूर्ण नर्मदा तट पर मिलती है। नर्मदा व नागों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिव के गले से पसीने के रुप में निकलकर नर्मदा जी बही एवं नाग महादेव के आभूषण है एवं नर्मदा जी शिव से उत्पन्न है इस कारण लोग नाग व नर्मदा नदी को भाई बहन मानते है। स्कन्दपुराण में कहा गया है कि हे नर्मदा नदी सात प्रमुख नदियो में श्रेष्ठ है। पापों को हरने वाली है। विचित्र है, गंधर्व, यक्ष तथा नागों से सेवित है। अमरकटंक नर्मदा मंदिर में एक सुन्दर नाग मूर्ति रखी है।

अमरकंटक का जैन मंदिर : अमरकटंक मे लगभग 12 बर्षो से एक विशाल जैन मंदिर का निर्माण हो रहा है। इस मंदिर में विशाल पत्थर राजस्थान के भरतपुर जिले के बंशी पहाडपुर से लाया जा रहा है। यह भूरा बलुअ I पत्थर है। से मगाये जाते है। इस मंदिर में अष्टधतु की 24 टन की 10 फिट ऊँचाई की आदिनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित है। जिस कमल पर यह प्रतिमा विराजमान है। उसका वनज 17 टन है। इस मंदिर की लगभग लम्बाई 450 फिट चौडाई 125 फुट शिखर की ऊँचाई लगभग 151 फिट है। मंदिर का निर्माण प्राचीन कला, स्थापत्य तथा वास्तु के अनुसार किया जा रहा है।[56]

परिणाम :

1. इस लेख से यह स्पष्ट होता है कि पर्यटन की दृष्टि से अमरकटंक का अभी विकास करने की अवाश्यकता है। यहॉ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को आधुनिक परिदृश्य में पर्यटन विभाग इन्हे विकसित कर रोजगार के अवसर

 Copyright © 2020 Authors

पैदा किये जा सकते है। यहां आने जाने वाले पर्यटको को प्रमुख स्थलो की जानकारी देने हेतु पर्यटन विभाग को गाइड नियुक्त करना चाहिए। यहॉ से प्राप्त कलचुरीकालीन मंदिरों के जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। आर्क्योलॉजीकल सर्वो ऑफ इण्डिया को संरक्षण एवं परिरक्षण का कार्य करवाना चाहिए। इससें इस क्षेत्र के पर्यटन का विकास तेजी से हो सकेगा।

2. शोध के दौरान अमरकटंक में अनेक नवीन पर्यटन केन्द्र प्रकाश में आये इन्हे पर्यटको के लिए सुविधा सम्पन्न बनाया जा सकता है। शोध के परिणामस्वरुप अनेक कलचुरीकालीन प्रतिमाएं एवं मंदिर मिले इन्हे पर्यटन के लिए विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार कहा जा सकता है कि अमरकटंक क्षेत्र धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। यहॉ सभी धर्मो का सम्यक विकास हुआ। कलचूरीकालीन समाज में जैन धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म, सौर धर्म, शाक्त धर्म, गाणपत्य धर्म इत्यादि का बोलबाला था। कलचूरी कालीन प्रशासक भी सभी धर्मो को समान रुप से महत्व देते थे। इसी कारण उन्होनों सभी धर्मो के देवी देवताओं की प्रतिमाओं का निर्माण करवाया था। इस क्षेत्र मे शैव धर्म का अधिक प्रचार प्रसार था इसी कारण यहॉ शिव की अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है। कलचुरी नरेश भी शैव धर्म के अनुयायी थे। देवी प्रतिमाओं की प्राप्ति से स्पष्ट है कि इस क्षेत्र मे शाक्त धर्म का भी बोलबाला था। अमरकटंक के समीप बहगढ़ नाले के कलचुरी मंदिर में शिव के विभिन्न रुपों का अंकन किया गया है। भगवान शिव पुराणों के अनुसार नृत्य एवं संगीत के प्रेणता है। इस मंदिर में शिव के नृत्यरत स्वरुप का अंकन व वीणाधारी शिव का अंकन भव्यता से किया गया है। गणेश को नृत्यरत मुद्रा में दिखाया गया है। अनेक पुरुष व नारियों को नृत्यरत एवं संगीत के विभिन्न बाद्य यंन्त्रों जैसे वासुरी मृद्ग एवं ढोलक. बजाते अंकित किया गया है।संगीत प्रेम इस क्षेत्र के लोगों में इस कला के माध्यम से देखने को मिलता है। कलाकार ने विभिन्न वाद्य यन्त्रों को कला में उत्कीर्ण किया है इससे ज्ञात होता है कलचुरी कालीन समाज में वीणा, ढोलक, मजीरा एवं नृत्य काफी प्रलित था एव शिव को नृत्य संगीत का प्रारम्भ करते समय स्मरण किया जाता होगा। इसलिए ही कला में कलाकार ने शिव को नृत्य एवं संगीत की मुद्रा में दिखाया है। शिव मंदिर में अनेक पुरुष व नारियों को भी नृत्य एवं संगीत की मुद्रा में दिखाया है। अमरकटक के आसपास जैन साम्प्रदाय के लोग रहते थे इस क्षेत्र मे जैन धर्म का बाहुल्य था। देवी प्रतिमाओं की प्राप्ति से स्पष्ट है कि इस क्षेत्र मे शाक्त धर्म का भी बोलबाला था। महर्षि भृगु, कपिल एवं मार्कण्डेय इत्यादि की तपोस्थली रहा अमरकटंक य़ुगो युगों से आध्यात्मिक व धार्मिक दृष्टिकोण से भी उत्कृष्ट रहा है। इसे मध्यप्रदेश सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटको के लिए अनेक सुविधझाओं का भी प्रबन्ध किया गया है। अमरकटंक में पर्यटको को आने–जाने के लि, lM+d ekxZ ,oa Bgjus ds fy, gksVy bR;kfn dh mRRke O;oLFkk djus dh vko';drk gSA

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :–

1.ज्योतिषी,नरेश :मंडला एवं डिण्डौरी जिला का पुरातत्व,सुषमा कम्प्यूटर एवं प्रिंटर, मंडला, 2006, पृ.16
2.चढार, मोहन लाल, अमरकटंक क्षेत्र का पुरावैभव, नई दिल्ली, 2017,पृ. 11
3. शुक्ल हीरालाल, लंका की खोज, रचना प्रकाशन इलाहाबाद, 1977,पृ. 195 एवं स्कन्दपुराण, 4/46–48,
4. मेघदूत,1,17,

5. महाभारत, वनपर्व, 83,9.

6. मार्कण्डेय पुराण, अध्याय–5,

7. पदम पुराण, 133,21

8. भट्टाचार्य, प्रणव कुमार, हिस्टारिकल ज्याग्रॉफी आफ मध्यप्रदेश फ्राम अर्ली रिकार्ड, दिल्ली, 1977, पृ, 97

9. दुबे, के.एन. : अमरकटंक परिदर्शन, विजन कम्प्यूटर, जबलपुर, पृ. 84.–95

10. अमरकोश,4/32

11. स्कन्दपुराण,अध्याय, 4

12. महाभारत, वनपर्व, 83,9

13. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया भाग 23,पृ. 76

14. चढार, मोहन लाल, अमरकटंक क्षेत्र का पुरावैभव, नई दिल्ली, 2017,पृ. 33

15. चौरे, आशुतोष, नर्मदा तट के प्रमुख तीर्थ,शताक्षी प्रकाशन, रायपुर, छत्तीसगढ, 2013, पृ. 24

16. वायु पुराण, 45,99–101, मार्कण्डेय पुराण 57, 21–23, कूर्म पुराण, 47,29–31, वामन पुराण, 13, 25–27

17. गुरु,शभुदयाल, मध्यप्रदेश की नदियॉ, भेपाल, 1983, पृ. 21

18. स्कन्दपुराण, 83, 23–93

19. गुरु,शभुदयाल, मध्यप्रदेश की नदियाँ, भोपाल, 1983, पृ. 26
20. मिश्र, देवकुमार, सोन के पानी के रंग, भोपाल, 1973 पृ. 76,77

21. शहडोल जिला गजेटियर, भोपाल, 1994

22. चढार, मोहन लाल, अमरकटंक क्षेत्र का पुरावैभव, नई दिल्ली, 2017,पृ. 12

23. मलपानी, जे.एन.:—अनूपपुर जिले का ग्रामवार पुरातत्व सर्वे रिपोर्ट, मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग, भोपाल, 2009
24. चन्द्रोल, जी, के,:—मूर्तिशिल्प में नदी देवी नर्मदा का रुपांकन, जबलपुर, 1994
25. रूपमण्डन, 22/47
26. राव, टी.ए. गोपीनाथ, एलीमेन्टस ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी खण्ड 1, 1968, पृ. 212, 213
27. दुबे, के.एन. : अमरकटंक परिदर्शन, विजन कम्प्यूटर, जबलपुर, पृ. 20
28. मलपानी, जे.एन.:—अनूपपुर जिले का ग्रामवार पुरातत्व सर्वे रिपोर्ट, मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग, भोपाल, 2009
29. ऋग्वेद 10/171/1
30. मलपानी, जे.एन.:—अनूपपुर जिले का ग्रामवार पुरातत्व सर्वे रिपोर्ट, मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग, भोपाल, 2009
31. शर्मा,राजकुमार :—म.प्र. के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रन्थ, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 1974,पृ. 361
32. शिवपुराण, 4/1/37
33. लिंग पुराण, संस्कृति संस्थान बरेली 99/8
34. स्कन्दपुराण, गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. 750
35. शर्मा,राजकुमार :—म.प्र. के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रन्थ, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 1974, 361
36. देसाई कल्पना, आइकोनोग्राफी ऑफ विष्णु, दिल्ली, 1973, पृ. 74
37. दुबे, नागेश,: एरण की कला, सागर 1997, पृ. 106
38. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 85,71
39. शर्मा,राजकुमार :—म.प्र. के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रन्थ, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 1974, 361
40. मलपानी, जे.एन.:—अनूपपुर जिले का ग्रामवार पुरातत्व सर्वे रिपोर्ट, मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग, भोपाल, 2009
41. सोमपुरा प्रभाशंकर : भारतीय शिल्पसंहिता,नई दिल्ली,1975
42. शर्मा,राजकुमार :—म.प्र. के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रन्थ, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 1974, 361
43. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 117/18—24
44. बनर्जी, जे.एन.,डेवलपमेंट ऑफ हिन्दु आइकोनोग्राफी, कलकत्ता,1956
45. शिवकुमार नामदेव, भारतीय जैनकला को म.प्र. की देन, सन्मतिवाणी, इन्दौर मई 75,पृ.13
46. रीवा राज्य गजेटियर, अंक 6,1907,पृ.104
47. शहडोल जिला गजेटियर, भोपाल, 1994
48. रीवा राज्य गजेटियर, अंक 6 ,1907, पृ.104
49. श्रीवास, संजय, श्री नर्मदा परिक्रमा, श्री माँ नर्मदा साहित्य सदन, अमरकटंक,2014, पृ.27
50. तुलसीकृत रामायण, सुन्दरकाण्ड
51. श्रीवास, संजय, श्री नर्मदा परिक्रमा, श्री माँ नर्मदा साहित्य सदन, अमरकटंक,2014, पृ. 38
52. दुबे, नागेश,: एरण की कला, सागर 1997, पृ. 108
53. चढार, मोहनलालः हिस्टोरिकल स्टडी आफ अपर जोहला रिवर वेसिन, एडरॉयड अन्तराष्ट्रीय पत्रिका अंक 1, बर्ष 2014, पृ. 59—'63
54. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 22/49
55. श्रीवास, संजय, श्री नर्मदा परिक्रमा, श्री माँ नर्मदा साहित्य सदन, अमरकटंक,2014, पृ.26
56. चढार, मोहन लाल, अमरकटंक क्षेत्र का पुरावैभव, नई दिल्ली, 2017,पृ. 46

 Copyright © 2020 Authors